इकाEC

ईसीआईएल गौरव

'आकाश' विशेषाँक

वर्ष-4 अंक-5 | अर्धवार्षिक हिन्दी गृहपत्रिका | अप्रैल-सितंबर, 2015

'आकाश आयुध प्रणाली' में ईसीआईएल .....एक और नया अध्याय

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि, ईसीआईएल (बाएँ से दूसरे); इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) एवं संबंधित उत्पादों के विकास हेतु 'स्कॉच ऑर्डर-आफ-मेरिट' पुरस्कार प्राप्त करते हुए

SKOCH ORDER-OF-MERIT

AWARDED TO

DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY / ELECTRONICS CORPORATION OF INDIA LTD

FOR QUALIFYING AMONGST

INDIA'S BEST - 2015 IN SMART GOVERNANCE

FOR

ELECTRONIC VOTING MACHINES AND RELATED PRODUCTS

GIVEN ON THIS TWENTY SECOND DAY OF SEPTEMBER 2015 AT NEW DELHI

SAMEER KOCHHAR, CHAIRMAN, SKOCH GROUP

'स्कॉच ऑर्डर-आफ-मेरिट' पुरस्कार

नव वर्ष-2016 मंगलमय हो

..... 'ईसीआईएल गौरव'

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम: शत् शत् नमन् .....

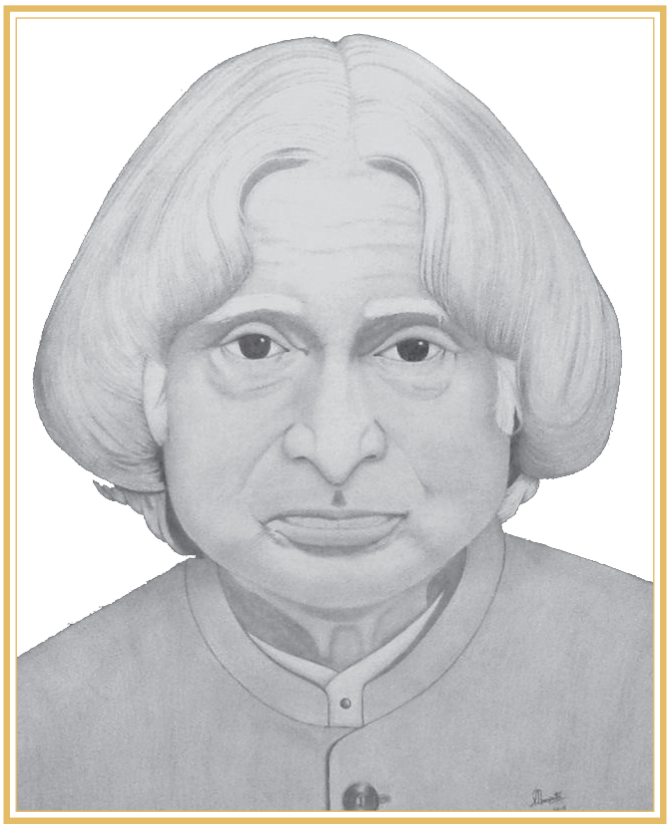

(15 अक्टूबर, 1931- 27 जुलाई, 2015)

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्रत्येक भारतीय के लिए एक महान मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत थे। वे प्रौद्योगिकी एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित व्यवस्था तथा राष्ट्रवाद के आदर्श व्यक्तित्व थे।

हम ईसीआईएल में डॉ. कलाम द्वारा वर्ष 1986 एवं 1992 के मध्य निदेशक मंडल के सदस्य के रूप में सामरिक इलेक्ट्रानिकी में स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के विकास के प्रति अप्रतिम योगदान के लिए अत्यंत आभारी हैं।

छायाचित्र का पेन्सिल-रेखाँकन: श्री एन. उमापति, उप महाप्रबंधक, सीपीपीएम

ईसीआईएल गौरव

इस अंक में

ईसीआईएल की अर्धवार्षिक
हिन्दी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव'

प्रधान संरक्षक
श्री पी. सुधाकर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संरक्षक
श्री वी.एस.बी. बाबु
निदेशक (कार्मिक)
तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

परामर्शदाता
श्री एन. नागेश्वर राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
डॉ. राजनारायण अवस्थी
हिन्दी अधिकारी

संपादकीय सहयोग
श्रीमती के. लक्ष्मी राणी, कार्यपालक सचिव
श्री ए.पी. राजु, तकनीकी प्रबंधक
श्री पवनकुमार शर्मा, तकनीकी अधिकारी
श्रीमती ओ. श्वेता, लेखा अधिकारी
श्रीमती एस. गौतमी, लेखा अधिकारी
श्रीमती पी.डी. रम्या तेजा, अभियंता
श्री कुलदीप कुमार यादव, अभियंता

संपादकीय पता
डॉ. राजनारायण अवस्थी
हिन्दी अधिकारी एवं संपादक 'ईसीआईएल गौरव'
इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062
फोन: 040-27182585
ई-मेल: drawasthi@ecil.co.in

विवरण	पृष्ठ संख्या

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम: शत् शत् नमन्.....	 1
डॉ. शेखर बसु: परमाणु ऊर्जा विभाग के नए सचिव	 3
प्रधान संरक्षक की कलम से.....	 4
निदेशक (वित्त): शुभकामना संदेश	 5
निदेशक (कार्मिक): शुभकामना संदेश	 6
अपनी बात.....	 7
संपादकीय: कुछ लिखने से पहले.....	 8
हमारे प्रेरणा-स्तंभ	
डॉ. होमी एन. सेठना	 9
तकनीकी स्तंभ: ईसीआईएल के बढ़ते कदम	
'आकाश आयुध प्रणाली' में ईसीआईएल का योगदान	 10
गुणता सर्कल को 'स्वर्ण पुरस्कार' सम्मान	 14
शुभागमन्-स्वागतम्	
हमारे माननीय अतिथिगण	 15
नव-नियुक्त माननीय वरिष्ठ अधिशासीगण	 17
राष्ट्रीय समारोह	
स्वतंत्रता दिवस-2015	 18
राजभाषा स्तंभ	
राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी जाँच-बिन्दु	 19
ईसीआईएल में 'राजभाषा सप्ताह' का आयोजन	 20
अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा-गतिविधियाँ	 21
साहित्यिक एवं सामाजिक आलेख	
हिन्दी व्याकरण: समास रचना	 24
हिन्दी साहित्य एवं इतिहास: 'दीपदान' एकाँकी	 26
आशा की डोर	 29
महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम	
'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस' का आयोजन	 32
महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम: झलकियाँ	 33
निगमीय सामाजिक दायित्व: झलकियाँ	 35
स्वास्थ्य-सौन्दर्य	 36
साहित्यिक रचनाएँ: काव्याँजलि	 37
संदेशा आया है	 38

(गृहपत्रिका नि:शुल्क एवं केवल आँतरिक परिचालन हेतु है)
'ईसीआईएल गौरव' में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। ईसीआईएल या संपादन समिति उनसे सहमत हो, यह आवश्यक नहीं है।

डॉ. शेखर बसु
परमाणु ऊर्जा विभाग के नए सचिव

डॉ. शेखर बसु ने दिनांक 23 अक्टूबर, 2015 को परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष एवं परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव का पदभार ग्रहण किया। इससे पूर्व वे भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई के निदेशक थे। डॉ. शेखर बसु एक उत्कृष्ट नाभिकीय वैज्ञानिक एवं इंजीनियर हैं। 'नाभिकीय पनडुब्बी कार्यक्रम' में परियोजना निदेशक के रूप में उनका योगदान नाभिकीय क्षेत्र में सदैव मील का पत्थर रहेगा।

बीएआरसी में निदेशक के पद पर रहते हुए डॉ. शेखर बसु ने नाभिकीय कृषि, खाद्य परिरक्षण जैसे सामाजिक कार्यक्रमों के विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

डॉ. शेखर बसु का जन्म दिनांक 20 सितंबर, 1952 को कोलकाता में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा बालीगंज गवर्नमेन्ट स्कूल, कोलकाता में हुई। इसके पश्चात् वीरमाता जीजाबाई टेक्नॉलॉजिकल इन्स्टीट्यूट (वीजेटीआई) से इन्होंने मेकैनिकल इंजीनियरी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। बीएआरसी में एक वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इन्होंने वर्ष 1975 में बीएआरसी के रिएक्टर इंजीनियरी प्रभाग में अनुसंधान कार्य प्रारंभ किया। तारापुर और कल्पाक्कम में नाभिकीय अपशिष्ट प्रबंधन के लिए डॉ. शेखर बसु ने नाभिकीय पुनर्चक्री संयंत्र के अभिकल्प, विकास एवं विनिर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ये संयंत्र अंतरराष्ट्रीय स्तर के हैं। परियोजना प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष के पद पर रहते हुए उनका मुख्य उत्तरदायित्व भारतीय न्यूट्रिनो प्रेक्षणशाला, तमिलनाडु का विकास करना था। इस समय ये एकीकृत नाभिकीय चक्रीय संयंत्र पर कार्य कर रहे हैं। डॉ. शेखर बसु के इन प्रयासों से निश्चित ही यह कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय स्तर की ख्याति प्राप्त करेगा। संप्रति, इनके मार्गदर्शन में देश के अनेक महत्त्वपूर्ण परमाणु ऊर्जा कार्यक्रमों पर अनुसंधान एवं विकास कार्य चल रहा है। बीएआरसी में निदेशक के पद पर रहते हुए डॉ. शेखर बसु ने नाभिकीय कृषि, खाद्य परिरक्षण जैसे सामाजिक कार्यक्रमों के विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। नाभिकीय विज्ञान एवं इंजीनियरी में कार्य करते समय उन्होंने सामरिक क्षेत्रों में परमाणु ऊर्जा के अनुप्रयोग पर निरंतर अनुसंधान एवं विकास कार्य किया। नाभिकीय क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए जाधवपुर विश्वविद्यालय ने वर्ष 2013 में इनको डी.लिट्. की उपाधि से सम्मानित किया। डॉ. शेखर बसु अंतरराष्ट्रीय स्तर के परमाणु वैज्ञानिक हैं। इनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए इन्हें निम्नलिखित सम्मानों से सम्मानित किया गया:-

- भारतीय नाभिकीय सोसाइटी पुरस्कार (2002)
- परमाणु ऊर्जा विभाग पुरस्कार (2006 एवं 2007)
- पद्म श्री (2014)

डॉ. शेखर बसु, भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी से 'पद्म श्री' सम्मान प्राप्त करते हुए

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

पी. सुधाकर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121055, 27182206
फैक्स: +91-40-27122535 ई-मेल: cmd@ecil.co.in

प्रधान संरक्षक की कलम से.....

'ईसीआईएल गौरव' अंक-5 का प्रकाशन हर्ष का विषय है। किसी भी संगठन की पत्रिका उसकी कार्य संस्कृति एवं कार्यकलापों की परिचायक होती है। 'ईसीआईएल गौरव' निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है, यह मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से सुखद अनुभूति है। विगत अंक में हमने पाठकों को '21 मीटर मेस (एमएसीई) दूरदर्शक'; 'सुरक्षित नेटवर्क अभिगम प्रणाली (एसएनएएस)'; 'कैन्सर हॉस्पिटल सूचना प्रबंधन प्रणाली (चिम्स)' एवं 'परमाणु स्पेक्ट्रमिकी तकनीक' से परिचित कराया था। इस अंक में हम रक्षा क्षेत्र में 'ईसीआईएल के बढ़ते कदम' के अंतर्गत 'आकाश आयुध प्रणाली' में ईसीआईएल का योगदान विषय पर तकनीकी आलेख प्रस्तुत कर रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि पत्रिका की संपादन समिति के सदस्य पूरे परिश्रम एवं लेखकीय कौशल के साथ इस अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करेंगे। निश्चित ही पत्रिका पठनीय एवं संग्रहणीय होगी। सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाएँ सदैव हमारा संबल रही हैं। भविष्य में भी हमें आप जैसे सुधी पाठकों से प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। आपके सुझाव हमें उत्कृष्टता की ओर ले जाने में निश्चित ही प्रेरणाप्रद होंगे।

जय हिन्द

पी.सुधाकर
(पी. सुधाकर)

अवसर को खो दिया तो समझो सफलता को खो दिया --- चार्ल्स

किशोर रुंगटा
निदेशक (वित्त)

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121522, 27182216
फैक्स: +91-40-27137509 ई-मेल: dirfin@ecil.co.in

शुभकामना संदेश

'ईसीआईएल गौरव' अंक-5 के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। आज के प्रतिस्पर्धा भरे आर्थिक युग में प्रौद्योगिकी, भाषा एवं ग्राहक का परस्पर संबंध अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वही प्रौद्योगिकी समाज के अंतिम छोर तक पहुँच पाएगी जो सामान्य भाषा में सरलता और सहजता से व्यक्त की जा सकती है। पत्रिका में प्रकाशित 'शुभागमन्-स्वागतम्' एवं 'महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम' के माध्यम से पाठक ईसीआईएल को व्यापकता से समझ सकेंगे। इस अंक में नए रचनाकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं से पत्रिका को ज्ञानप्रद बनाने में प्रमुख योगदान दिया है।

मुझे खुशी है कि 'ईसीआईएल गौरव' के इस अंक में मुख्यालय सहित विभिन्न आँचलिक, शाखा, यूनिट कार्यालयों की गतिविधियों को भी सम्मिलित किया गया है। यह भी प्रसन्नता का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद द्वारा हमारे निगम को वर्ष 2014-15 की अवधि में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'राजभाषा शील्ड' प्रदान की गई। मैं निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूँ कि वे राजभाषा में अधिक से अधिक काम करें ताकि ईसीआईएल इस क्षेत्र में भी नए कीर्तिमान स्थापित कर सके। मेरी शुभकामना है कि 'ईसीआईएल गौरव' निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

जय हिन्द

किशोर

(किशोर रुंगटा)

वी.एस.बी. बाबु
निदेशक (कार्मिक)
तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121484, 27182221
फैक्स: +91-40-27120033 ई-मेल: dirper@ecil.co.in

शुभकामना संदेश

'ईसीआईएल गौरव' अंक-5 का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। प्रकाशन कार्य में सहयोग के लिए प्रबंधन ने संपादन समिति का पुनर्गठन किया है। पत्रिका के माध्यम से हमारा निगम पाठकों से सीधा संवाद करेगा। अब हमारी कार्य-कुशलता पर यह निर्भर होगा कि हम पत्रिका का संपादन कितनी उत्कृष्टता से करें। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि समिति के सभी सदस्य पूर्ण मनोयोग से सहयोग करेंगे। किसी भी संगठन में मानव संसाधन का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। संगठन के कार्मिकों की कार्य-कुशलता समग्रत: संगठन में अपनाई जाने वाली कार्य संस्कृति की परिचायक होती है। विगत वर्षों से ई-अभिशासन के क्षेत्र में निगम जिस प्रकार राष्ट्र की अनेक महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है, निश्चित ही यह प्रगति के लिए उपयोगी होगा। ईसीआईएल के कार्मिक आज मुख्यालय से सुदूर विभिन्न तकनीकी परियोजनाओं में विषम भौगोलिक एवं मौसम संबंधी परिस्थितियों के साथ कार्य कर रहे हैं, उनके इस संकल्प के पीछे हम सभी उनके साथ हैं। 'ईसीआईएल गौरव' के माध्यम से मैं अपने कार्मिकों के परिवारजनों को भी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आप सबका सहयोग भी अविस्मरणीय रहेगा।

मैं आशा करता हूँ कि नव गठित संपादन समिति पत्रिका को उत्कृष्टतम की ओर ले जाने में अपने अनुभव, कौशल एवं दायित्वों का पूर्ण सत्यनिष्ठा से निर्वहन करेगी। पत्रिका की संपादन यात्रा में मेरी शुभकामनाएँ सदैव उनके साथ हैं। अंक-4 में हमें पाठकों की प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं। मैं आशा करता हूँ कि इस अंक पर भी हमें अपने पाठकों से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त होंगी।

जय हिन्द

वी एस बी बाबु

(वी.एस.बी. बाबु)

अपनी बात.....

'ईसीआईएल गौरव' अंक-5 आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका के विगत अंकों के प्रकाशन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर इस अंक को और अधिक सारगर्भित तथा पठनीय बनाने का प्रयास किया गया है। नाभिकीय क्षेत्र के साथ-साथ रक्षा क्षेत्र में भी ईसीआईएल निरंतर अपना योगदान दे रहा है। इसी कारण इस अंक में निगम के सामरिक इलेक्ट्रानिकी प्रभाग द्वारा विकसित 'आकाश आयुध प्रणाली' से संबंधित तकनीकी आलेख को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है। आज के युग में प्रौद्योगिकी जिस गत्यात्मकता के साथ गतिशील है, भाषा को भी उससे उसी गति से तादात्म्य स्थापित करना होगा। प्रौद्योगिकी एवं भाषा के मध्य सामंजस्य आज समय की माँग है। निश्चित रूप से 'ईसीआईएल गौरव' में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि आलेखों की भाषा में वैज्ञानिक अनुप्रयोगों को सम्यक्रूपेण समझा जा सके। संभव है कि भाषा का प्रवाह पाठकों को सरल न लगे। मेरा निवेदन है कि पाठकगण 'भाषा में वैज्ञानिकता' और 'वैज्ञानिकता की भाषा' को समझने का प्रयास करें। हमारे हिन्दी अनुभाग तथा पत्रिका की नव गठित संपादन समिति ने जिस परिश्रम से संपादन कार्य किया है, वे प्रशंसा के पात्र हैं।

सम्माननीय रचनाकारों का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। पाठकों ने भी जिस आत्मीयता के साथ हमें अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजी हैं, हम उनका आदर करते हैं। आशा है कि उनकी यह आत्मीयता आगे भी इसी प्रकार बनी रहेगी।

आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में.....

(एन. नागेश्वर राव)

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय

कुछ लिखने से पहले.....

'ईसीआईएल गौरव' अंक-5 आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अपने परिश्रम के प्रति आशान्वित हूँ। विगत अंकों के संपादन एवं सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाओं के अनुभव से इस अंक को उत्कृष्टतम बनाने का प्रयास किया गया है। पत्रिका संपादन में सहयोग देने के लिए संपादन समिति का पुनर्गठन किया गया। संपादन समिति के सभी सदस्य अपने-अपने क्षेत्र के विषय-विशेषज्ञ हैं। निश्चित ही उनका अनुभव पत्रिका की पठनीयता को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा। इस अंक में रक्षा क्षेत्र एवं इलेक्ट्रानिकी से संबंधित आलेख को प्रकाशित किया गया है। साहित्यिक रचनाओं के अंतर्गत प्रकाशित कहानी एवं कविताएँ निश्चित ही साधारणीकरण की दृष्टि से पाठकों को सोचने और समझने के लिए विवश करेंगी। मैं रचनात्मक योगदान देने वाले सभी रचनाकारों के प्रति सादर अनुगृहीत हूँ।

पत्रिका के संपादन कौशल में राजभाषा के क्षेत्र में प्रकाशित अन्य पत्रिकाओं का संपादन कौशल भी काफी प्रभावी रहा। विशेष रूप से '10वें विश्व हिन्दी सम्मेलन', भोपाल में सहभागिता के समय अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं को पढ़ने का सुअवसर मिला। उन पत्रिकाओं से बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं अपना परम सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर हिन्दी के सुविख्यात पत्रकार एवं साहित्यकार श्री राजेन्द्र माथुर सभागार में व्याख्यान के प्रथम सत्र में 'अनुप्रयुक्त विज्ञान अनुवाद: हिन्दी का विस्तार' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर सहभागिता की अनुमति प्रदान करने के लिए मैं अपने निगम के प्रबंधन का सदैव आभारी रहूँगा।

मैं अपने उन सुधी पाठकों के प्रति अत्यंत विनम्रता के साथ सादर श्रद्धावनत् हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर हमें अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजीं। इस अंक में मैंने उनके सुझावों का पूर्णनिष्ठा के साथ अनुपालन किया है। मैं आप सभी से पुन: आशा करता हूँ कि आप इसी प्रकार मेरा साथ देते रहेंगे। इसी आशा के साथ कि यह अंक आपको अपनी प्रतिक्रिया लिखने के लिए प्रेरित करेगा।

(डॉ. राजनारायण अवस्थी)
हिन्दी अधिकारी एवं संपादक

हमारे प्रेरणा-स्तंभ

डॉ. होमी एन. सेठना

(24 अगस्त, 1923 - 05 सितंबर, 2010)

भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जगत् में डॉ. होमी एन. सेठना का नाम सदैव अविस्मरणीय रहेगा। डॉ. होमी नासीरवनजी सेठना का जन्म मुंबई में 24 अगस्त, 1923 को हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा सेन्ट जेवियर्स हाई स्कूल, फोर्ट, मुंबई से प्रारंभ हुई। इन्होंने बॉम्बे (अब मुंबई) विश्वविद्यालय के रसायन प्रौद्योगिकी विभाग से 1944 में बी.एससी. (टेक.) तथा मिसीगेन युनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका से 1946 में एम.एस.ई. की डिग्री प्राप्त की। अपने प्रारंभिक जीवन से ही ये अत्यंत परिश्रमी एवं मेधावी छात्र थे। विज्ञान से संबंधित विषयों के अध्ययन में इनकी विशेष रुचि थी। सन् 1947 में डॉ. होमी एन. सेठना ने इम्पीरियल केमिकल इण्डस्ट्रीज में प्रशिक्षु के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। डॉ. होमी एन. सेठना के जीवन में डॉ. होमी जे. भाभा का गहरा प्रभाव था। वे प्राय: डॉ. भाभा के साथ वैज्ञानिक विषयों पर विचार-विमर्श

डॉ. एच.एन. सेठना, अध्यक्ष (बाएँ से तीसरे) एवं डॉ. ए.एस. राव (मध्य में)

किया करते थे। सन् 1949 में डॉ. भाभा ने सेठना को 'इंडियन रेअर अर्थ्स (आईआरई)' अल्वेई में 'वर्क्स मैनेजर' के रूप में नियुक्त किया। डॉ. सेठना की नाभिकीय पदार्थों के अनुसंधान एवं विकास की वैज्ञानिक यात्रा यहीं से प्रारंभ हुई। नवंबर 1954 में नई दिल्ली में 'भारत में शाँतिपूर्ण प्रयोग हेतु परमाणु ऊर्जा का विकास' विषय पर सम्मेलन आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में डॉ. होमी एन. सेठना ने 'यूरेनियम तथा थोरियम खनन एवं शुद्धिकरण' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन में यह बात उभर कर आई कि 1948 में गठित परमाणु ऊर्जा आयोग द्वारा इन पाँच वर्षों में कोई विशेष अनुसंधान एवं विकास कार्य नहीं हुआ। उस समय आईआरई प्रतिवर्ष अपनी क्षमता से दो गुना 1500 टन मॉन्जाइट का प्रविधीकरण कर रहा था। अनेक उत्कृष्ट वैज्ञानिकों, उद्योगपतियों एवं यंत्रियों ने यह अनुभव किया कि परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास की दृष्टि से यह आगे चलकर महत्त्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध होगी।

डॉ. होमी एन. सेठना ने 1955 में 'परमाणु ऊर्जा के शाँतिपूर्ण उपयोग' विषय पर प्रथम जेनेवा सम्मेलन में भाग लिया तथा 1958 में द्वितीय जेनेवा सम्मेलन में उप महासचिव बन गए। उन्होंने 1959 में परमाणु ऊर्जा स्थापना [अब भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी)] में मुख्य वैज्ञानिक अधिकारी के रूप में प्रवेश किया तथा 1966 में बीएआरसी के अध्यक्ष बन गए एवं 1983 तक उसका नेतृत्व किया। बाद में वे अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग तथा सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग बने। वर्ष 1983 में सेवानिवृत्ति तक वे इन पदों पर कार्य करते रहे।

18 मई, 1974 में शाँतिपूर्ण परमाणु विस्फोट 'ऑपरेशन शक्ति' (कोड नाम: 'स्माइलिंग बुद्धा') में डॉ. एच.एन. सेठना का योगदान अप्रतिम था। डॉ. एच.एन. सेठना नाभिकीय वैज्ञानिक तथा रासायनिक इंजीनियर थे। इन वैज्ञानिक उपलब्धियों में योगदान के लिए भारत सरकार तथा अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने उन्हें सम्मानित किया। प्रमुख सम्मान इस प्रकार हैं:-

1959: पद्म श्री, 1960: शाँतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार
1966: पद्म भूषण, 1967: युनिवर्सिटी आफ मिसीगेन सेस्क्विसेन्टेनियल सम्मान, 1975: पद्म विभूषण

सेवानिवृत्ति के बाद वे 'आन्ध्र वैली पॉवर सप्लाई कंपनी लिमिटेड' के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा 'नार्थ-ईस्टर्न युनिवर्सिटी' के कुलपति के पद को सुशोभित किया। ट्रॉम्बे में थोरियम एवं यूरेनियम संयंत्रों की स्थापना में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था। जादूगुड़ा में यूरेनियम मिल की स्थापना उन्हीं के दिशा-निर्देशन में हुई। डॉ. एच.एन. सेठना को इस बात पर गर्व था कि वे डॉ. होमी जे. भाभा की वैचारिक परंपरा के अनुगामी हैं। इसी परंपरा ने उन्हें किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए अनुशासित किया था। वे जीवन-पर्यन्त अध्ययन एवं चिन्तनशील रहे। दिनांक 5 सितंबर, 2010 को उनका देहावसान हुआ। भारतीय प्रौद्योगिकी एवं परमाणु ऊर्जा विभाग में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। ◆

ईसीआईएल के बढ़ते कदम

'आकाश आयुध प्रणाली' में ईसीआईएल का योगदान

*उत्पल सेन **

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल), परमाणु ऊर्जा विभाग का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उद्यम है। राष्ट्र की सीमाओं पर आने वाली किसी भी चुनौती के सामना के लिए ईसीआईएल प्रौद्योगिकीपरक योगदान देने में सदैव अग्रणी रहा है। भारतीय सेना के लिए विकसित आकाश आयुध प्रणाली में ईसीआईएल, भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल), हैदराबाद का सहयोगी है। दिनांक 5 मई, 2015 को आकाश आयुध प्रणाली को भारतीय सेना में सम्मिलित किया गया। ईसीआईएल की सामरिक क्षेत्र में आत्म-निर्भरता तथा वर्षों से निरंतर गहन अनुसंधान एवं विकास के कारण ही यह अत्याधुनिक आयुध प्रणाली राष्ट्र के समक्ष आने वाली किसी भी चुनौती का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए सक्षम हो पाई है। रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन के एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (आईजीएमडीपी) की 'मिशन क्रिटिकल प्रणाली' के विकास में ईसीआईएल की बहु-उत्पाद, बहु-प्रौद्योगिकी तथा बहु-अनुशासनात्मक उद्यमिता का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। रक्षा क्षेत्र में राष्ट्र की प्रौद्योगिकीपरक उपलब्धियों में ईसीआईएल का यह सहयोग सदैव अविस्मरणीय रहेगा। रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) के साथ-साथ ईसीआईएल भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी) जैसे संस्थानों के साथ भी प्रौद्योगिकी-कार्यक्रमों में सहयोगी है।

मिसाइल चेकआउट सुविधा

कमान्ड, नियंत्रण एवं संचार वाहन

मोबाइल प्रणाली मिसाइल चेकआउट

'आकाश' एक मध्यम दूरी की जमीन से हवा में मार करने वाली एक मोबाइल मिसाइल है। इस रक्षा प्रणाली का विकास डीआरडीओ ने आईजीएमडीपी कार्यक्रम के अंतर्गत स्वदेशी प्रौद्योगिकी के माध्यम से किया है। आकाश मिसाइल द्वारा 30 किमी दूर 18,000 मीटर की ऊँचाई पर वायुयान को लक्ष्य किया जा सकता है। आकाश आयुध प्रणाली का विकास रक्षा अनुसंधान एवं विकास

* **श्री उत्पल सेन**, सामरिक इलेक्ट्रानिकी प्रभाग, ईसीआईएल में अपर महाप्रबंधक हैं। इन्होंने 'आकाश' एवं 'ब्रह्मोस' स्वदेशी मिसाइल प्रणाली के व्यावसायिक विकास तथा विपणन क्रिया-कलापों में उल्लेखनीय योगदान दिया है। ये ईसीआईएल के स्नातक इंजीनियर प्रशिक्षु (जीईटी) बैचः 1981-82 के अधिशासी हैं।

श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल (दाएँ से तीसरे), आकाश आयुध प्रणाली के प्रथम उत्पादन को थल सेनाध्यक्ष जनरल दलबीर सिंह सुहाग, पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम, एडीसी (मध्य में) को हस्ताँतरित करते हुए अन्य (सबसे बाएँ) एवीएम एन.बी. सिंह, निदेशक (तकनीकी), बीडीएलः (बाएँ से चौथे) ले.जन. वी.के. सक्सेना, महानिदेशक, सेना वायु रक्षाः (बाएँ से पाँचवें) श्री एस.के. शर्मा, अप्रनि, बीईएलः (सबसे दाएँ) श्री जे.आर.के. राव, संयुक्त सचिव, रक्षा उत्पादनः (दाएँ से चौथे) श्री वी. उदय भास्कर, अप्रनि, बीडीएलः (दाएँ से पाँचवें) श्री जी. चन्द्रमौलि, परियोजना निदेशक, 'आकाश'

प्रयोगशाला (डीआरडीएल) ने किया है। भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल) इसकी प्रमुख उत्पादन एजेन्सी है। बीडीएल ने ईसीआईएल को आकाश आयुध प्रणाली के लड़ाकू कमान्ड एवं नियंत्रण केन्द्र (सीसीसी) तथा मिसाइल चेकआउट के लिए मोबाइल प्रणाली (एमएसएमसी) की महत्त्वपूर्ण क्राँतिक (क्रिटिकल) प्रणालियों के विकास की जिम्मेदारी दी थी। ईसीआईएल ने प्रथम प्रतिदर्श मॉडल (एफओपीएम) का सफलतापूर्वक विकास किया। उल्लेखनीय

श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल (मध्य में), श्री वी. उदय भास्कर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बीडीएल (दाएँ से दूसरे) के साथ आकाश आयुध प्रणाली के संबंध में समझौता ज्ञापन आदान-प्रदान करते हुए

है कि आकाश आयुध प्रणाली की अन्य प्रणालियों में ईसीआईएल द्वारा विकसित केवल दो प्रणालियों; 'सीसीसी' तथा 'एमएसएमसी' के आधार पर सेना ने आकाश आयुध प्रणाली की दो रेजिमेन्टों के लिए आपूर्ति हेतु बीडीएल को 'बल्क ऑर्डर' दिया।

श्री एन. रवि किरण, तकनीकी अधिकारी सेना के जवानों को नियंत्रण पैनेल का प्रचालन प्रशिक्षण देते हुए

सीसीसी का मुख्य आधार उन्नत 'कमान्ड कंट्रोल कंप्यूटर कम्युनिकेशन एवं इन्टेलीजेन्सी (सी⁴आई) है। इसी के आधार पर आकाश आयुध प्रणाली गतिमान लक्ष्य को यथार्थता एवं प्रभावी ढंग से निशाना बना सकती है। वस्तुतः, सीसीसी इस आयुध

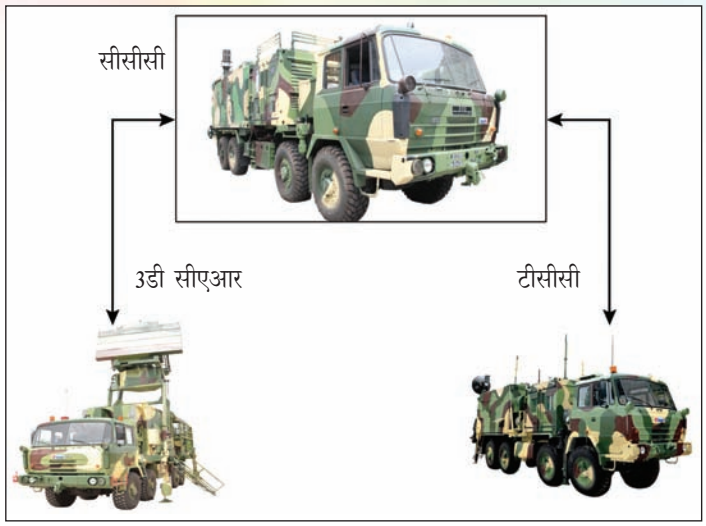

कमान्ड नियंत्रण केन्द्र फ्रॉटपीस

प्रणाली का हृदय है। इसी के माध्यम से त्रि-दिशीय केन्द्रीय अधिग्रहण रेडार (3डी-सीएआर) एवं चार ट्रूप नियंत्रण केन्द्रों के संचार माध्यम से मिसाइल प्रक्षेपित की जा सकती है। सीसीसी उस स्थल पर तैनात अन्य आयुध प्रणालियों के साथ परस्पर सामंजस्य रखता है। आयुध प्रणालियों की तैनाती के सीसीसी, 3डी-सीएआर एवं टीसीसी के मध्य संप्रेषण को इनक्रिप्शन यॉंत्रिकता का प्रयोग करके सुरक्षित किया जाता है। इस प्रकार ईसीआईएल, डीआरडीएल के साथ सीसीसी की संकल्पना के लिए सॉफ्टवेयर के विकास, परीक्षण एवं प्रामाणिकता तथा सत्यापन प्रक्रिया में प्रारंभ से ही सहयोगी रहा है।

'आकाश' मिसाइल का प्रक्षेपण: रक्षा क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि

मिसाइल चेकआउट के लिए मोबाइल प्रणाली (एमएसएमसी) पूर्ण एकीकृत मिसाइल की समस्त उप-प्रणालियों की प्रचालनता का सूक्ष्मता से निरीक्षण करती है। इस कंप्यूटरीकृत चेकआउट प्रणाली को वाहन की मोबाइल चैसिस में संस्थापित किया जाता है। इस प्रणाली को रेगिस्तान सहित देश के किसी भी कोने में स्थापित

स्क्वाड्रॅन नियंत्रण केन्द्र

किया जा सकता है। इसको अत्यंत अल्प सूचना में देश की सीमाओं में तैनात किया जा सकता है तथा आवश्यकतानुसार वहाँ से विस्थापित किया जा सकता है। ईसीआईएल विगत 20 वर्षों से सशस्त्र सेनाओं को प्रौद्योगिकीपरक सेवाएँ प्रदान कर रहा है। ईसीआईएल को अपनी इन उपलब्धियों पर गर्व है। सशस्त्र सेनाओं की आवश्यकतानुसार प्रौद्योगिकी विकास एवं उत्पादन के लिए ईसीआईएल में कुशल इंजीनियर तथा तकनीशियन हैं। ईसीआईएल के अनुभव एवं ज्ञान के सामंजस्य के माध्यम से आज मिसाइल प्रणाली की प्रत्येक सामरिक आवश्यकता को स्वदेशी तकनीक एवं प्रौद्योगिकी से विकसित किया जा सकता है।

परमात्मा सत्य है और प्रकाश उसकी छाया है --- प्लेटो

सामरिक आकाश मिसाइल के उत्पादों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ईसीआईएल की संगठन टीम की संरचना इस प्रकार है:-

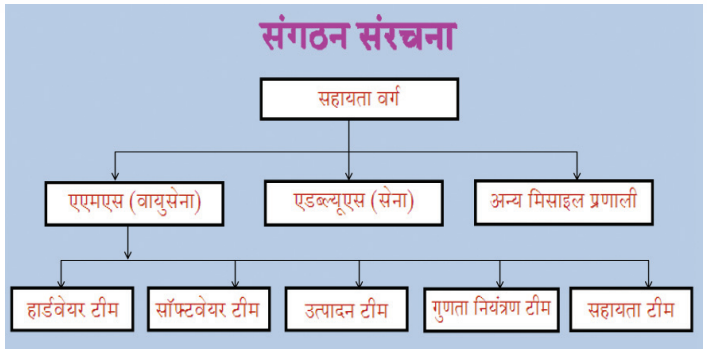

एएमएस; आकाश मिसाइल प्रणाली (वायुसेना) तथा एडब्ल्यूएस; आकाश आयुध प्रणाली (सेना) है। इनका अनुरक्षण ईसीआईएल द्वारा मिसाइलों की तैनाती के स्थान पर किया जाता है। किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिए ईसीआईएल के कुशल इंजीनियर पूर्णरूपेण सक्षम हैं। इन प्रणालियों के अनुरक्षण के लिए ईसीआईएल आवश्यक स्पेयर का भंडार रखता है।

सशस्त्र सेनाओं के जवानों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण:

ईसीआईएल में आकाश मिसाइल प्रणाली एवं आकाश आयुध प्रणाली में सशस्त्र सेनाओं के जवानों के प्रशिक्षण की पूर्ण व्यवस्था है। यह प्रशिक्षण दो स्तरों में किया जाता है; ऑपरेटर प्रशिक्षण तथा अनुरक्षण प्रशिक्षण। प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम में सैद्धाँतिक एवं प्रायोगिक कक्षाओं का संचालन किया जाता है। इस प्रशिक्षण में प्रणाली का विन्यास, फीचर्स एवं समस्त उप प्रणालियों के प्रकार्य तथा उपस्कर की प्रचालन प्रविधि के बारे में आधुनिक तकनीकों के माध्यम से जानकारी दी जाती है। प्रशिक्षण के समय

श्रीमती डी. सीमादुरावासिनी, वरिष्ठ प्रबंधक सेना के जवानों को प्रशिक्षण देती हुईं

सुश्री शिखा सुमन, अभियंता सेना के जवानों को 'डिस्प्ले कंसोल' का प्रचालन प्रशिक्षण देती हुईं

प्रणाली से संबंधित अध्ययन सामग्री तथा सरलता से प्रणाली को समझने के लिए प्रस्तुतीकरण दिया जाता है। इस तकनीकी प्रशिक्षण को सैन्य-स्थलों में भी दिया जाता है। सितंबर-अक्टूबर, 2015 में 27 एडी रेजिमेन्ट को जालंधर (पंजाब) में प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया।

स्क्वाड्रॅन नियंत्रण केन्द्र के लिए 'प्रशिक्षण अनुकार (सिमुलेटर) कंसोल'

प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए ईसीआईएल, हैदराबाद ने 'प्रशिक्षण अनुकार (सिमुलेटर) कंसोल' का विकास किया है। इस कंसोल की कार्य-प्रणाली वास्तविक स्क्वाड्रॅन नियंत्रण केन्द्र (एससीसी) के समान होती है। कंसोल के विकास का मुख्य प्रयोजन यह है कि सशस्त्र सेनाओं के जवान इसमें कार्य करते समय वास्तविक प्रणाली जैसा अनुभव कर सकें। प्रणाली के 'फंक्शनल की-बोर्ड' तथा 'प्रस्थिति मॉनीटरन पैनेल' का विकास ईसीआईएल के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इसी के माध्यम से युद्ध-कौशल के समय नियंत्रण कमान्ड तथा प्रस्थिति मॉनीटरन किया जाता है। इस प्रशिक्षण सिमुलेटर में वास्तविक हार्डवेयर का प्रयोग किया जाता है ताकि जवान स्क्वाड्रॅन नियंत्रण प्रणाली को समझकर यथार्थता के साथ लक्ष्य को निशाना बना सकें।

◆

मोक्ष के चार द्वारपाल हैं- शम, विचार, सन्तोष और सत्संग --- योग वसिष्ठ

ईसीआईएल की उपलब्धियों में..... एक और नया पंख

गुणता सर्कल को 'स्वर्ण पुरस्कार' सम्मान

*जे. सूर्यनारायणा **

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल) की कार्य-प्रणाली में गुणता आश्वासन को प्रमुख स्थान दिया जाता है। निगम जून, 2012 से 'क्वालिटी सर्कल फोरम आफ इंडिया (क्यूसीएफआई)' का संस्थागत पंजीकृत सदस्य है। इसकी सदस्यता 31 मार्च, 2017 तक वैध है। निगम की 'लक्ष्य' टीम ने दिनांक 21 एवं 22 सितंबर, 2015 को 'गुणता सर्कल अभिसमय', हैदराबाद चैप्टर द्वारा आयोजित प्रतियोगिता 'स्वर्ण पुरस्कार श्रेणी' में पुन: अपना इतिहास दोहराया। 'लक्ष्य' टीम ने 'वी/ यूएचएफ ट्राँससीवर के लिए फिल्टर पोर्ट परीक्षण जिग' उत्पाद का विकास किया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी 'लक्ष्य' टीम के सदस्य हैं:-

श्री जे. सूर्यनारायणा, वरिष्ठ प्रबंधक, मध्यस्थ
श्रीमती सीएच. अरुणाकुमारी, वरि. तकनीकी अधिकारी, टीम लीडर
श्रीमती एस. श्रीवाणी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
श्री आलोक गुप्ता, अभियंता
श्री ललित राही, अभियंता

ईसीआईएल की 'लक्ष्य' टीम ने लगातार तीसरी बार इस उपलब्धि को प्राप्त किया है।

पुरस्कार प्राप्त करते हुए (बाएँ से) श्री ललित राही, अभियंता; श्रीमती एस. श्रीवाणी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी; श्री जे. सूर्यनारायणा, वरिष्ठ प्रबंधक; (दाएँ से) श्री आलोक गुप्ता, अभियंता; श्रीमती सीएच. अरुणाकुमारी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, टीम लीडर

पुरस्कार प्राप्त करते हुए (बाएँ से) श्री आलोक गुप्ता, अभियंता; श्री जे. सूर्यनारायणा, वरिष्ठ प्रबंधक; (दाएँ से) श्रीमती सीएच. अरुणाकुमारी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, टीम लीडर; श्रीमती एस. संध्या, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

इस टीम ने 'मेक-इन-इंडिया-गुणता संकल्पनाओं के माध्यम से संकल्प' विषय पर दिनांक 18 से 21 दिसंबर, 2015 तक चेन्नै में आयोजित राष्ट्रीय अभिसमय (एनसीक्यूसी) में ईसीआईएल का प्रतिनिधित्व कर 'सम-उत्कृष्ट पुरस्कार' प्राप्त किया। इस उपलब्धि ने ईसीआईएल के गौरवमयी इतिहास में एक और नया अध्याय जोड़ दिया है।

वी/यूएचएफ ट्राँससीवर फिल्टर पोर्ट परीक्षण जिग

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से 'लक्ष्य टीम' को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ

* **जे. सूर्यनारायणा**, संचार प्रणाली वर्ग, ईसीआईएल में वरिष्ठ प्रबंधक हैं। नियंत्रण प्रणाली के गुणता-प्रबंधन में इनको विशेष अनुभव है। गुणता-प्रबंधन के क्षेत्र में इन्होंने अनेक बार सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त किया है।

◆

शुभागमन्-स्वागतम्
हमारे माननीय अतिथिगण

श्री आर. परसुराम, भाप्रसे (नि.), राज्य निर्वाचन आयुक्त; मध्य प्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग विमर्श करते हुए

वाइस एडमिरल ए.के. बहल, परियोजना निदेशक, एटीवीपी; ईसीआईएल के शीर्ष प्रबंधन से विचार-विमर्श करते हुए

वाइस एडमिरल ए.के. बहल, परियोजना निदेशक, एटीवीपी; ईसीआईएल के उत्पादों में रुचि दिखाते हुए

श्री एस.के. शिवकुमार, निदेशक, आईएसएसी (नि.); ईसीआईएल के शीर्ष प्रबंधन से विचार-विमर्श करते हुए

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. रमेश कौल को सम्मानित करते हुए। साथ में हैं; श्री वाई.एस. मय्या, पूर्व अप्रनि, ईसीआईएल

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; श्री नसीम ज़ैदी, मुख्य चुनाव आयुक्त, भारत निर्वाचन आयोग को ईवीएम की कार्य-प्रणाली दर्शाते हुए

शुभागमन्-स्वागतम्
हमारे माननीय अतिथिगण

ले. जनरल पी.आर. शंकर (महानिदेशक, अर्टिलरी) के साथ ईसीआईएल के निदेशक (वित्त) तथा निदेशक (का.)

डॉ. आर. चिदंबरम, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार; ईसीआईएल के शीर्ष प्रबंधन से विचार-विमर्श करते हुए

डॉ. जॉयदेब चट्टोपाध्याय, निदेशक, एसपीआईसी; ईसीआईएल के शीर्ष प्रबंधन से विचार-विमर्श करते हुए

राज्यसभा के पटल पर प्रस्तुत पत्रों से संबंधित संसदीय समिति के समक्ष ईसीआईएल का शीर्ष प्रबंधन

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति ईसीआईएल के शीर्ष प्रबंधन से राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में विचार-विमर्श करती हुई

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति के समक्ष ईसीआईएल का शीर्ष प्रबंधन, परमाणु ऊर्जा विभाग एवं अन्य अधिकारीगण

शुभागमन्-स्वागतम्

नव-नियुक्त माननीय वरिष्ठ अधिशासीगण

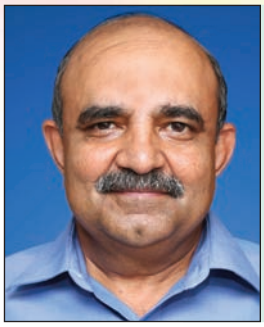

मेजर जनरल अतुल मेहरा (नि.) ने भारतीय सेना की 37 वर्ष की सेवा में दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी, नेटवर्क सुरक्षा तथा इलेक्ट्रानिक युद्ध-कौशल के विकास के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई। इन्होंने भारतीय सेना के अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। मेजर जनरल अतुल मेहरा (नि.) ने दिनांक 03-11-2015 को ईसीआईएल में 'कार्यपालक निदेशक' का पदभार ग्रहण किया तथा संप्रति, सूचना प्रौद्योगिकी एवं दूरसंचार वर्ग में कार्यपालक निदेशक हैं।

ब्रिगेडियर ए. उमर फ़ारूख, वीएसएम (नि.) ने भारतीय सेना के सिगनल्स कोर में 33 वर्ष की सेवा की अवधि में अनेक कमान्ड एवं स्टाफ पदों पर कार्य किया। भारतीय सेना के लिए नवीनतम सूचना प्रौद्योगिकी प्रदान करना इनकी उल्लेखनीय उपलब्धि है। ये 'डिफेन्स सर्विसेस स्टाफ कॉलेज, वेलिंगटन' से प्रशिक्षित हैं। भारतीय सेना में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए भारत के राष्ट्रपति द्वारा ब्रिगेडियर ए. उमर फ़ारूख, वीएसएम (नि.) को 'विशिष्ट सेवा मेडल' से सम्मानित किया गया। इन्होंने दिनांक 26-08-2015 को ईसीआईएल में 'महाप्रबंधक' का पदभार ग्रहण किया। संप्रति, ब्रिगेडियर ए. उमर फ़ारूख, वीएसएम (नि.); रक्षा प्रणाली वर्ग तथा नियंत्रण प्रणाली वर्ग में महाप्रबंधक हैं।

श्री अनुराग कुमार, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जमशेदपुर से इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरी में स्नातक हैं। इनको व्यवसाय विकास, परियोजना विकास एवं इंजीनियरी, संयंत्र इंजीनियरी और असेम्बली तथा परीक्षण के क्षेत्र में 25 वर्ष का गहन अनुभव है। इन्होंने भारत इलेक्ट्रानिक्स एवं रिलाएंस इंडस्ट्रीज में रक्षा इलेक्ट्रानिकी, एकीकृत सुरक्षा प्रणाली तथा दूरसंचार आधारित संरचनाओं में कार्य किया। श्री अनुराग कुमार ने दिनांक 05-10-2015 को ईसीआईएल में 'महाप्रबंधक' का पदभार ग्रहण किया तथा संप्रति, उपकरण प्रणाली वर्ग में महाप्रबंधक हैं।

ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह दलाल (नि.) ने भारतीय सेना के अनेक महत्त्वपूर्ण कमान्ड एवं स्टाफ पदों पर कार्य किया। जम्मू एवं कश्मीर में नियंत्रण रेखा तथा उत्तर पूर्व क्षेत्रों में आतंकवाद प्रभावित क्षेत्रों में इन्होंने भारतीय सेना के दलों का नेतृत्व किया। ये जम्मू एवं कश्मीर में 16 कोर मुख्यालय में कमान्ड स्टाफ अधिकारी रह चुके हैं। इन्होंने दिनांक 23-10-2015 को ईसीआईएल में 'महाप्रबंधक' का पदभार ग्रहण किया। संप्रति, ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह दलाल (नि.); आँचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली में महाप्रबंधक हैं।

श्री पी. रमेश, को प्रशासन के क्षेत्र में 18 वर्षों का अनुभव है। ये आंध्र विश्वविद्यालय से प्रबंधन में स्नातकोत्तर (एमबीए) हैं। इन्होंने ऊषोदया पब्लिकेशन (ईनाडु ग्रुप) तथा आईवीआरसीएल लिमिटेड में महत्त्वपूर्ण प्रबंधकीय पदों पर कार्य किया। औद्योगिक संगठनों में मानव संसाधन विकास तथा कर्मचारी संबंध के ये विशेषज्ञ हैं। इन्होंने दिनांक 30-10-2015 को ईसीआईएल में वरिष्ठ प्रबंधक, मानव संसाधन का पदभार ग्रहण किया है। संप्रति, श्री पी. रमेश; कार्मिक वर्ग, कर्मचारी संबंध अनुभाग में वरिष्ठ प्रबंधक, मानव संसाधन हैं।

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

राष्ट्रीय समारोह

स्वतंत्रता दिवस- 2015

निगम में 15 अगस्त, 2015 को 69वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल के मुख्य प्रवेश द्वार पर राष्ट्रध्वजारोहण कर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के 'सम्मान गार्ड्स' का निरीक्षण किया। समारोह में श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त), श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक), श्री ए. राजेश्वर राव, महासचिव, ईसीआईएल एस एवं डब्ल्यू यूनियन तथा डॉ. पी. वेणुबाबु, सचिव, ईसीआईएल अधिकारी संघ भी उपस्थित थे।

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रध्वज को सलामी देते हुए

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के 'सम्मान गार्ड्स' का निरीक्षण करते हुए

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय नं. 1 के छात्रों द्वारा देशभक्ति-गान का प्रस्तुतीकरण

श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए।
मंच पर (बाएँ से) श्री ए. राजेश्वर राव, महासचिव, ईसीआईएल एस एवं डब्ल्यू यूनियन, श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक), श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) तथा डॉ. पी. वेणुबाबु, सचिव, ईसीओए

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी जाँच-बिन्दु

1. हिन्दी में प्राप्त या हस्ताक्षरित पत्रों का उत्तर केवल हिन्दी में दें या भेजें।
2. सामान्य आदेश, परिपत्र, अखिल भारतीय स्तर पर विज्ञापन, सूचना, नियम इत्यादि सभी कागजात द्विभाषी अर्थात् हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करें।
3. भारत सरकार के विभागों को भेजे जाने वाले सभी प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में भेजें।
4. क्षेत्र 'क' और 'ख' को भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पता केवल हिन्दी में ही लिखें।
5. कार्यालयों में आयोजित प्रत्येक बैठक की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) में तैयार करें।
6. हिन्दी में मूल पत्राचार को बढ़ाने के लिए कंप्यूटरों में 'यूनिकोड' सक्रिय किया जाए।
7. मैनुअल हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार करें।
8. सभी समारोहों के निमंत्रण पत्र हिन्दी एवं अंग्रेजी में मुद्रित कराएँ।
9. कार्यालय में प्रयोग होने वाले सभी पत्रशीर्ष, फार्म, रजिस्टर, फाइलें, आगंतुक पत्र, पहचान पत्र एवं इसी तरह की अन्य सामग्री हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मुद्रित कराएँ।
10. प्रचार-प्रसार के लिए प्रयोग आने वाले पोस्टर, स्टिकर आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मुद्रित कराएँ।
11. सभी बैनर त्रिभाषी (क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी एवं अंग्रेजी) में प्रदर्शित किए जाएँ।
12. कार्यालय में प्रयोग होने वाले सभी लिफाफों, बिल, रसीद, वाउचर, प्रमाण-पत्र तथा अन्य लेखन सामग्री के ऊपर कंपनी का लोगो इकाEC, नाम एवं पता हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराएँ।
13. कार्यालय की सभी रबड़ की मोहरें द्विभाषी अर्थात् हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराएँ।
14. कार्यालय के सभी नाम पट्ट, साइन बोर्ड, सूचना बोर्ड और अन्य इसी तरह के बोर्ड क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में लिखाएँ और भाषाओं का क्रम क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी और अंग्रेजी होना चाहिए तथा तीनों भाषाओं के अक्षरों का आकार समान होना आवश्यक है।
15. वाहनों पर भी कंपनी का नाम, लोगो इकाEC सहित हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखवाएँ।
16. जिन कर्मचारियों के पास हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है उन्हें हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा संचालित कक्षाओं या हिन्दी पत्राचार पाठ्यक्रम की कक्षाओं; प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ में नामाँकित करें।
17. केवल अंग्रेजी टंकण तथा अंग्रेजी आशुलिपि का ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों को हिन्दी टंकण तथा हिन्दी आशुलिपि के प्रशिक्षण के लिए हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा संचालित कक्षाओं में भेजें।
18. जिन कर्मचारियों के पास हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है, उन्हें हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रशिक्षण के लिए हिन्दी कार्यशालाओं में नामाँकित करें।
19. राजभाषा कार्यान्वयन को सभी प्रकार के विभागीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में एक विषय के रूप में शामिल करें।
20. प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' समारोह आयोजित किया जाए।

प्रस्तुतिः हिन्दी अनुभाग

ईसीआईएल में 'राजभाषा सप्ताह' का आयोजन

ईसीआईएल में 14 सितंबर, 2015 को 'राजभाषा सप्ताह' का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर ए. उमर फ़ारूख, वीएसएम (नि.), महाप्रबंधक, रक्षा प्रणाली वर्ग एवं विशिष्ट अतिथि श्री के. श्रीधर राव, प्रभारी, अभियाँत्रिकी सेवाएँ प्रभाग ने ज्योति प्रदीप्तन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। श्री एन. नागेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत करते हुए निगम की विभिन्न राजभाषा गतिविधियों पर

'हिन्दी दिवस' समारोह के अवसर पर ब्रिगेडियर ए. उमर फ़ारूख, वीएसएम (नि.), महाप्रबंधक, रक्षा प्रणाली वर्ग संबोधित करते हुए

प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर ए. उमर फ़ारूख, वीएसएम (नि.), महाप्रबंधक, रक्षा प्रणाली वर्ग ने उद्घाटन भाषण में कहा कि किसी भी प्रभुता संपन्न स्वतंत्र देश की पहचान उसकी राजभाषा, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज एवं संविधान होते हैं। हमारा देश एक बहुभाषी देश है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच हिन्दी भाषा एक सेतु का काम कर रही है। हमारे देश की राजभाषा हिन्दी ने सदैव ही पूरे देश को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया है। संविधान में राजभाषा का स्थान पाने वाली हिन्दी को कार्यालय काम में अपनाना और इसका प्रचार-प्रसार करना आज निगम के प्रत्येक कर्मचारी का नैतिक एवं संवैधानिक कर्त्तव्य है।

19 सितंबर, 2015 को 'राजभाषा सप्ताह' समापन समारोह के अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में प्रो. शीला मिश्र, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद को मुख्य अतिथि के रूप में एवं श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) को सम्माननीय अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कहा कि हमारा देश बहुभाषी देश है। प्रत्येक भारतीय भाषा की अपनी विशाल साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साँस्कृतिक परंपरा और विकास-प्रक्रिया है। प्रत्येक भाषा अपने आप में एक समर्थ भाषा है। फिर भी आज सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में जब नई-नई तकनीकी तथा याँत्रिक सुविधाओं का विस्तार हो रहा है, ऐसे परिवेश में भाषाओं को प्रौद्योगिकी के साथ सामंजस्य मिलाना एक चुनौतीभरा कार्य है।

श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) ने अपने संबोधन में कहा कि संवैधानिक प्रावधानों का सम्मान करते हुए हमें अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. शीला मिश्र ने भाषा, समाज और राष्ट्रीयता पर अत्यंत प्रभावशाली व्याख्यान दिया। मुख्य अतिथि ने सर्वप्रथम विभिन्न समाचार पत्रों में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के हिन्दी

'राजभाषा सप्ताह' समापन समारोह: मंच पर (दाएँ से) प्रो. शीला मिश्र, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय; श्री पी. सुधाकर, अप्रनि एवं श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त)

दिवस के उपलक्ष्य में प्रकाशित संदेश की प्रशंसा की। मातृभाषा और राजभाषा के महत्त्व को दर्शाते हुए उन्होंने कहा कि सभी को अपनी मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए। मातृभाषा के सम्मान से ही राजभाषा हिन्दी का सम्मान बढ़ेगा। इस अवसर पर निगम में आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

◆

आँचलिक, शाखा एवं यूनिट कार्यालयों में राजभाषा-गतिविधियाँ

आँचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली

'हिन्दी दिवस' समारोह का आयोजन:

आँचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली में दिनांक 14 सितंबर, 2015 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री शंकर डे, महाप्रबंधक (उत्तर) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। श्री सत्यप्रकाश, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने राजभाषा कार्यान्वयन प्रगति रिपोर्ट को प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने अपने सारगर्भित अभिभाषण में सरकारी कार्य प्रणाली में राजभाषा के महत्त्व को रेखाँकित किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रति सम्मान एवं अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में उसका प्रयोग हम सबका संवैधानिक कर्त्तव्य है। इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के समस्त सदस्य तथा कार्यालय के समस्त अधिकारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री सत्यप्रकाश, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी ने किया।

आँचलिक कार्यालय (दक्षिण), बेंगलूरू

'हिन्दी दिवस' समारोह का आयोजन:

आँचलिक कार्यालय (दक्षिण), बेंगलूरू में 14 सितंबर, 2015 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री डी.आर. वेंकटसुब्बु, आँचलिक प्रबंधक (दक्षिण) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के निर्देशन में श्री एम.एस. वेंकटसुब्बैया, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक एवं श्री अम्बरीष कुमार पाठक, अभियंता ने 'लिखित प्रश्नोत्तरी', 'अनुवाद', 'श्रुतलेखन', 'समाचार वाचन' तथा 'स्मृति' प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की। सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। श्री के.आर. विजयेन्द्र, ट्रेड्समेन 'ई' को सभी प्रतियोगिताओं में सहभागिता के लिए विशेष प्रोत्साहन सम्मान दिया गया। इस अवसर पर प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन के लिए तीन निर्णायकों को भी सम्मानित किया गया। प्रभारी, कार्मिक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् 'हिन्दी भारत माँ की बिन्दी' गीत के साथ हिन्दी दिवस समारोह का समापन किया गया।

राजभाषा पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र:

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में वर्ष 2014-15 की अवधि में उत्कृष्ट कार्य के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा आँचलिक कार्यालय (दक्षिण), बेंगलूरू को लघु उद्योग श्रेणी

श्री डी.आर. वेंकटसुब्बु, आँचलिक प्रबंधक (दक्षिण) एवं अन्य अधिकारीगण सचिव, राजभाषा विभाग से 'राजभाषा शील्ड' एवं 'प्रमाणपत्र' प्राप्त करते हुए

श्री डी.आर. वेंकटसुब्बु, आँचलिक प्रबंधक (दक्षिण) एवं अन्य अधिकारीगण 'राजभाषा शील्ड' एवं 'प्रमाणपत्र' प्राप्त के साथ

में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, भाप्रसे, सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा श्री डी.आर. वेंकटसुब्बु, आँचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति को 'राजभाषा शील्ड' एवं 'प्रमाणपत्र' प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री एच. बुच्चप्पा, तकनीकी प्रबंधक एवं सुश्री सी. श्यामला श्रीपाद, उप मुख्य अधीक्षक भी उपस्थित थे। राजभाषा कार्यान्वयन के प्रगामी प्रयोग की दिशा में यह कार्यालय प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर है। नगर राजभाषा

कार्यान्वयन समिति द्वारा विगत वर्ष भी इस कार्यालय को राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

आँचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन:

आँचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई में दिनांक 29-08-2015 को 'कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के समुचित उपाय एवं सरल हिन्दी पत्राचार' विषय पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री विनोदकुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, मुंबई को अतिथि संकाय के रूप में आमंत्रित किया गया। श्री राजन बी. पाटील, बिक्री अधिकारी एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अतिथि संकाय तथा समस्त प्रतिभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर श्री अजयकुमार तिवारी, आँचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने उद्घाटन संबोधन में कहा कि सभी को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए विविध उपायों द्वारा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की नितान्त आवश्यकता है। कार्यक्रम के अतिथि संकाय श्री विनोदकुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित, 1967) की धारा 3(3), राजभाषा नियम-5 तथा नियम-12 के अनुपालन में विस्तृत जानकारी दी एवं जन सामान्य हिन्दी भाषा के व्यावहारिक रूप का भी विश्लेषण किया। कार्यशाला में राजभाषा विभाग द्वारा संचालित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तथा उसके विविध लाभ के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर अनुवाद करने के लिए राजभाषा विभाग तथा गूगल के विभिन्न भाषाई अनुप्रयोगों से परिचित कराया गया। कार्यशाला में सभी प्रभागों से अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की।

आँचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन:

आँचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता में दिनांक 20-06-2015 को 'हिन्दी व्याकरण एवं लिंग निर्धारण' विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य कार्मिकों को हिन्दी भाषा के विभिन्न व्याकरणिक पक्षों से अवगत कराना था। कार्यशाला में श्रीमती रजनी पोद्दार, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने इस संबंध में हिन्दी व्याकरण के विभिन्न आयामों को उदाहरण सहित समझाया। कार्यशाला में प्रतिभागियों ने व्यावहारिक हिन्दी तथा हिन्दी व्याकरण पर प्रश्नोत्तर किया। अंत में श्री देबाशिस देबनाथ, उप आँचलिक प्रबंधक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे अपने दैनिक कार्यों में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करें। श्री तरुण मुखर्जी, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अतिथि वक्ता एवं समस्त प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

'हिन्दी दिवस' समारोह आयोजन:

दिनांक 14 सितंबर, 2015 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। श्री तरुण मुखर्जी, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति (मुख्यालय); श्री दिलीप साहा, अपर महाप्रबंधक एवं प्रमुख, राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर परियोजना तथा श्री देबाशिस देबनाथ, उप आँचलिक प्रबंधक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति को मंच पर आमंत्रित किया। सुश्री देवश्री मोदक, हिन्दी अनुवादक ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सर्वप्रथम माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार के 'हिन्दी दिवस संदेश' का वाचन किया। श्री देबाशिस देबनाथ, उप आँचलिक प्रबंधक ने अपने संबोधन में कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने की प्रेरणा दी। उन्होंने यह भी कहा कि यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) तथा श्री दिलीप साहा, प्रमुख, राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर परियोजना ने राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हम सबको प्रेरित किया। इस अवसर पर कार्यालयीन बुलेटिन 'प्रयास' के तृतीय अंक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के अंत में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित लेखन एवं आशुभाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। श्री देबाशिस देबनाथ, उप आँचलिक प्रबंधक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

शाखा कार्यालय, चेन्नै

'हिन्दी दिवस' समारोह आयोजन:

शाखा कार्यालय, चेन्नै में दिनांक 14 सितंबर, 2015 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति (मुख्यालय) मुख्य अतिथि के रूप से आमंत्रित थे। श्रीमती एम.यू. सुधामई, प्रभारी अधिकारी (कार्मिक) एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। श्री एन.वी. जयकर, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने संबोधन में राजभाषा हिन्दी के विषय में विचार व्यक्त करते हुए शाखा कार्यालय की विभिन्न राजभाषा गतिविधियों पर प्रकाश डाला। श्रीमती एम.यू. सुधामई, प्रभारी अधिकारी (कार्मिक) एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्ट को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर 'अनुवाद', 'श्रुतलेखन', 'पठन' एवं 'निबंध' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक); श्री एन.वी. जयकर, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक एवं श्री डी.जे. राव, उप महाप्रबंधक ने प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं को पुरस्कृत किया। श्री आर. सुब्रमणियम, मुख्य अधीक्षक ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। समारोह का समापन राष्ट्रगान से हुआ। हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्रीमती बी. विजयलक्ष्मी, मुख्य अधीक्षक ने योगदान दिया।

यूनिट कार्यालय, तिरुपति

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन:

यूनिट कार्यालय, तिरुपति में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दिनांक 29-05-2015 को 'प्रशासनिक शब्दावली' विषय पर 'हिन्दी कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशासनिक शब्दावली से परिचित कराना था। कार्यशाला का संचालन श्री एस. नौषाद, वरिष्ठ प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया। कार्यशाला में प्रतिभागियों को निगम के उत्पादों के बारे में, विशेष रूप से 'इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम)' की कार्य प्रणाली को हिन्दी में समझाया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कार:

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, संयोजक, भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, तिरुपति द्वारा समिति की गतिविधियों में सक्रिय प्रतिभागिता एवं राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में

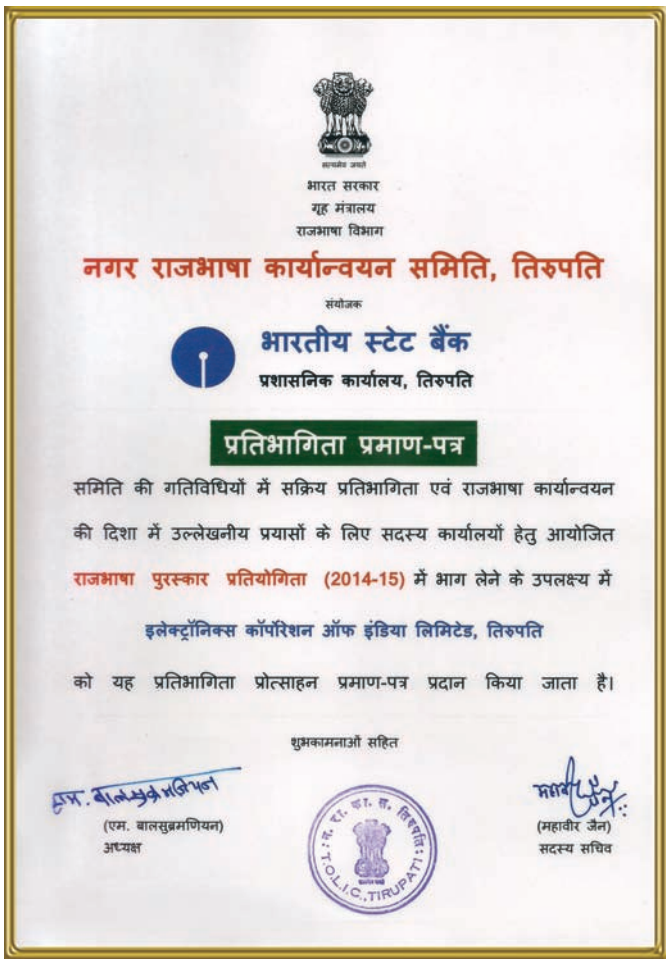
भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुपति

संयोजक

भारतीय स्टेट बैंक
प्रशासनिक कार्यालय, तिरुपति

प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र

समिति की गतिविधियों में सक्रिय प्रतिभागिता एवं राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उल्लेखनीय प्रयासों के लिए सदस्य कार्यालयों हेतु आयोजित राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता (2014-15) में भाग लेने के उपलक्ष्य में इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, तिरुपति को यह प्रतिभागिता प्रोत्साहन प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

शुभकामनाओं सहित

(एम. बालसुब्रमणियन)
अध्यक्ष

(महावीर जैन)
सदस्य सचिव

उल्लेखनीय प्रयासों के लिए सदस्य कार्यालयों हेतु आयोजित 'राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता (2014-15)' में भाग लेने के उपलक्ष्य में यूनिट कार्यालय तिरुपति को 'प्रतिभागिता प्रोत्साहन प्रमाणपत्र' प्रदान किया गया। श्री वी. अजयबाबु, प्रभारी, यूनिट कार्यालय, तिरुपति एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्री एस. नौषाद, वरिष्ठ प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने 'प्रतिभागिता प्रोत्साहन प्रमाणपत्र' प्राप्त किया। ◆

हिन्दी व्याकरण: समास रचना

अनिल कुमार *

साहित्य सृजन में समास का सम्यक् ज्ञान आवश्यक है। परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक पदों (शब्दों) के मेल को समास कहते हैं। पदों से इस प्रकार बने शब्द 'समस्त पद' अथवा 'सामासिक पद' कहलाते हैं। ऐसे पदों के पहले पद को 'पूर्व पद' और बाद के पद या पदों को 'उत्तर पद' कहते हैं। सामासिक पदों के आपसी विग्रह को अलग करना 'समास विग्रह' कहलाता है। समास विग्रह से शब्द के वास्तविक अर्थ का सम्यक् ज्ञान होता है। जैसे:-

1.	सत्याग्रह	:	सत्य के लिए आग्रह
2.	विषधर	:	विष को धारण करने वाला
3.	रसोईघर	:	रसोई के लिए घर

समास के भेद:

प्रमुख रूप से समास के निम्नलिखित भेद हैं:-

1) तत्पुरुष समास 2) बहुब्रीह समास
3) द्वंद्व समास 4) अव्ययीभाव समास

1) तत्पुरुष समास:

जिस समास में पहला पद प्रधान न होकर उत्तर पद (बाद का पद) प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास में कारकीय परसर्गों को, से, के लिए, से (द्वारा), का, की, के, में, पर, से का लोप हो जाता है। जैसे:-

1.	गगनचुंबी	:	गगन को चूमने वाला
2.	राहखर्च	:	राह के लिए खर्च
3.	शरणागत	:	शरण में आया हुआ
4.	धनहीन	:	धन से हीन

तत्पुरुष समास के अंतर्गत 'कर्मधारय समास' एवं 'द्विगु समास' भी आते हैं।

(i) कर्मधारय समास:

जिस समस्त पद में पूर्वपद तथा उत्तर पद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो, वह कर्मधारय समास कहलाता है। इस समास में उत्तर पद प्रधान होता है।

इस समास के मुख्यत: तीन रूप हैं:-

- विशेषण-विशेष्य से युक्त कर्मधारय समास
- उपमान-उपमेय से युक्त कर्मधारय समास
- मध्य पदलोपी कर्मधारय समास

(ii) द्विगु समास:

जिस सामासिक पद में पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो एवं समूह का बोध कराए वह द्विगु समास कहलाता है। जैसे:-

1.	नवग्रह	:	**नौ ग्रहों** का समाहार यहाँ नव (नौ) संख्यावाचक विशेषण है
2.	चौराहा	:	**चार राहों** का समूह यहाँ चार संख्यावाचक विशेषण है
3.	त्रिवेणी	:	**तीन वेणियों** का समूह यहाँ तीन संख्यावाचक विशेषण है
4.	सततई	:	**सात सौ** दोहों का संग्रह यहाँ सात सौ संख्यावाचक विशेषण है
5.	पंचकोण	:	**पाँच कोणों** का समाहार यहाँ पाँच संख्यावाचक विशेषण है

2) बहुब्रीह समास:

जिन सामासिक पदों में कोई भी पद प्रधान न होकर कोई अन्य ही पद प्रधान हो, वह बहुब्रीह समास कहलाता है। इस समास द्वारा बनने वाला पद विशेषण का कार्य करता है, वह बहुब्रीह समास कहलाता है। जैसे:-

1. चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी	:	विष्णु
2. त्रिनेत्र	तीन नेत्रों वाला है जो	:	शिव
3. चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके	:	कृष्ण, विष्णु
4. चारपाई	चार पायों वाली हो जो	:	खाट

कर्मधारय समास और बहुब्रीह समास में अंतर:

समास में कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो कर्मधारय और बहुब्रीह दोनों में पाए जाते हैं। इन दोनों का अंतर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना आवश्यक होगा:-

* **श्री अनिल कुमार**, वैज्ञानिक सहायक 'बी', इंजीनियरी सेवाएँ प्रभाग में विगत लगभग सात वर्षों से कार्यरत हैं। सिविल इंजीनियरी के साथ-साथ हिन्दी भाषा एवं व्याकरण तथा कविता लेखन पर इनकी विशेष रुचि है। इनके रचनात्मक योगदान के लिए इनको अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है।

परिश्रम सभी पर विजयी होता है --- होमर

- कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है। जैसे 'कमलनयन' में 'कमल' उपमेय और 'नयन' उपमान है (कमल जैसे नयन) तथा 'पीतांबर' में 'पीत' विशेषण और 'अंबर' विशेष्य है (पीला है जो अंबर)
- बहुब्रीह समास में समस्त सामासिक शब्द ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है। जैसे:-

कमलनयन	कमल जैसे नयन हैं जिसके	: कृष्ण या विष्णु
पीतांबर	पीले हैं अंबर जिसके	: कृष्ण या विष्णु

- जब दोनों पदों में से कोई पद प्रधान नहीं होता तथा दोनों से भिन्न कोई तीसरा अर्थ निकले तो बहुब्रीह समास होता है तथा जहाँ दोनों शब्दों में विशेषण-विशेष्य या उपमेय-उपमान का संबंध हो तो वहाँ कर्मधारय समास होता है।

3) द्वंद्व समास:

जिस सामासिक पद में कोई एक पद प्रधान न होकर दोनों पदों का समान महत्त्व हो तथा जिसमें पदों को मिलाने वाले समुच्चयबोधकों (और, तथा, या, अथवा) का लोप हो गया हो, वह द्वंद्व समास कहलाता है। जैसे:-

1. स्वर्ग-नरक	:	स्वर्ग और नरक	*अथवा*	स्वर्ग या नरक
2. पाप-पुण्य	:	पाप और पुण्य	*अथवा*	पाप या पुण्य
3. इधर-उधर	:	इधर और उधर	*अथवा*	इधर या उधर
4. माता-पिता	:	माता और पिता	*अथवा*	माता या पिता
5. पति-पत्नी	:	पति और पत्नी	*अथवा*	पति या पत्नी
6. माँ-बाप	:	माँ और बाप	*अथवा*	माँ या बाप
7. ऊँच-नीच	:	ऊँच और नीच	*अथवा*	ऊँच या नीच

4) अव्ययीभाव समास:

जिस सामासिक पद में पूर्वपद प्रधान हो और वह अव्यय हो तथा उसके योग से समस्त पद भी अव्यय बन जाए वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे:-

1.	आजन्म	:	जन्म से लेकर
2.	यथाशक्ति	:	शक्ति के अनुसार
3.	प्रतिदिन	:	दिन-दिन, हर दिन
4.	भरपेट	:	पेट भर कर

कई बार एक ही शब्द की दो बार आवृत्ति होती है, उससे जो अव्यय बनते हैं, उन्हें भी अव्ययीभाव समास कहा जाता है। जैसे:-

1.	रातोंरात	:	रात-रात में
2.	बातोंबात	:	बात-बात में
3.	कानोंकान	:	कान ही कान में

द्विगु समास और बहुब्रीह समास में भेद:

द्विगु समास में पहला (पूर्व) पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा (उत्तर) पद उसका विशेष्य, परन्तु बहुब्रीह समास में सारा पद ही विशेषण का कार्य करता है। परन्तु कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं जिन्हें दोनों समासों के अंतर्गत रखा जा सकता है। इनका विग्रह यह भी निर्धारित करता है कि यह द्विगु समास है या बहुब्रीह समास। जैसे:-

1. चतुर्भुज	चार भुजाओं से युक्त	:	द्विगु समास
	चार भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु)	:	बहुब्रीह समास
2. त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह	:	द्विगु समास
	तीन नेत्र हैं जिसके (शंकर)	:	बहुब्रीह समास

संधि और समास में अंतर:

संधि और समास में अंतर जानना अत्यंत आवश्यक है। संधि और समास में निम्नलिखित अंतर होता है:-

- संधि में वर्णों का मेल होता है, जबकि समास में शब्दों का

संधि: वर्णों का मेल

1. पुस्तकालय	:	पुस्तक+आलय	*(अ+आ= आ)*
2. गणेश	:	गण+ईश	*(अ+इ= ए)*

समास: शब्दों का मेल

1. रुपया-पैसा	:	रुपया+पैसा	*('और' का लोप)*
2. धनहीन	:	धन+हीन	*('से' का लोप)*

- संधि में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन भी होता है, जबकि समास में प्राय: ऐसा नहीं होता
- समास में बहुत से पदों के बीच के परसर्गों या समुच्चयबोधकों का लोप होता है ◆

हिन्दी साहित्य एवं इतिहास: 'दीपदान' एकाँकी

*अपर्णा रंजन **

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य एवं इतिहास परस्पर पूरक होते हैं। हिन्दी साहित्य के अनेक रचनाकारों ने भारतीय इतिहास को अपनी साहित्यिक यात्रा का प्रतिपाद्य बनाया है। ऐसे महान रचनाकारों में डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम अग्रणी है। डॉ. रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य के उत्कृष्ट एकाँकीकार हैं। पाश्चात्य एकाँकी शिल्प अपनाते हुए भी विषय-वस्तु, चरित्र अंकन तथा साँस्कृतिक वातावरण की रुचि में निजी भारतीय परंपरा के प्रति सजग रहने के कारण ही डॉ. रामकुमार वर्मा आधुनिक हिन्दी एकाँकी के जनक कहे जाते हैं। इनकी एकाँकियों में छायावादी काव्य की भावुकता, प्राचीन भारतीय संस्कृति और इतिहास के प्रति आस्था तथा यत्र-तत्र कल्पना की रंगीनी के साथ-साथ विशिष्ट प्रसंगों एवं चरित्रों के मार्मिक अंशों की रमणीक अभिव्यक्ति मिलती है। उन्होंने अपनी समस्त एकाँकियों में 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' तथा 'नाटकेषु एकाँकी' की चरितार्थता का अनुभव कराया है। उनके एकाँकी साहित्य में एक ही मूल संवेदना की ऐसी प्रत्यक्ष झलक प्रस्तुत की गई है, जिसमें एक ही अंक के कुछ दृश्यों, कुछ पात्रों और कुछ घटनाओं के माध्यम से उनके विराट एवं व्यापक रूप की झाँकी मिल जाती है। यद्यपि, एकाँकी का स्वरूप लघुकाय होते हुए भी पूर्ण एवं स्वतंत्र होता है, लेकिन 'दीपदान' एकाँकी में तत्कालीन समाज की ऐसी झलक मिलती है जो साँकेतिक होते हुए भी अनंत विस्तार को विचित्र ढंग से समेटे रहती है। इस एकाँकी की कथा-वस्तु में संकलन-त्रय अर्थात् कार्य, स्थान और काल की योजना अपने चरम उत्कर्ष पर है।

> **'दीपदान' डॉ. रामकुमार वर्मा की ऐतिहासिक एकाँकी है। इसमें राजपूताने की गौरवगाथा को आधार बनाया गया है। राजपूताना वीराँगनाओं की धरती है।**

'दीपदान' डॉ. रामकुमार वर्मा की ऐतिहासिक एकाँकी है। इसमें राजपूताने की गौरवगाथा को आधार बनाया गया है। राजपूताना वीराँगनाओं की धरती है। यह वह पवित्र धरती है, जहाँ की वीराँगनाओं ने अपने जीवन की अंतिम साँस तक देश की आन, मान और मर्यादा की रक्षा की है। राजपूताना की धरती का एक-एक रज-कण इस बात का साक्षी है कि वहाँ का इतिहास त्याग और बलिदान का इतिहास है। देश-भक्ति, राज-भक्ति और कर्त्तव्य पालन के निर्वहन के लिए यहाँ की वीराँगनाओं ने कभी भी अपने प्राणों की परवाह नहीं की है। यही कारण है कि इस धरा पर जब तक सूर्य और चंद्र का प्रकाश रहेगा, गंगा और यमुना की जलधारा प्रवहमान रहेगी तब तक भारत के इतिहास में पन्ना धाय जैसी वीराँगना के महान बलिदान की गाथा युगों-युगों तक अमर रहेगी। जिस प्रकार पन्ना धाय ने अपने महान बलिदान के माध्यम से अपने राज्य के अस्तित्व की रक्षा की, वैसा ऐतिहासिक बलिदान भारत के साहित्य में क्या विश्व के साहित्य में भी दुर्लभ है।

राजस्थान का ऐतिहासिक स्थापत्य वैभव

* **श्रीमती अपर्णा रंजन धर्मपत्नी श्री मनोजकुमार रंजन**, तकनीकी अधिकारी, एपीएसडी, राजनीति शास्त्र में एम.ए. हैं। ऐतिहासिक एवं साहित्यिक रचनालेखन में इनकी विशेष रुचि है। वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तीकरण एवं महिला अधिकारों के प्रति इनका लेखन सदैव नए संदर्भों एवं आयामों के साथ होता है।

प्रस्तुत एकाँकी में पन्ना धाय और राजपूताने (चित्तौड़) के कुँवर उदय सिंह का यह संवाद भारतीय इतिहास की एक अमूल्य धरोहर है;

(जब कुँवर उदय सिंह पन्ना धाय से तुलजा भवानी के सामने हो रहे नृत्यगान देखने को चलने के लिए आग्रह करते हैं तो पन्ना धाय नहीं जाती है। इस पर कुँवर उदय सिंह रूठ जाते हैं कि यदि आप मेरे साथ वहाँ नहीं चलेंगी तो मैं तलवार के साथ ही सो जाऊँगा।)

पन्ना: अभी समय नहीं आया कुँवर! चित्तौड़ की रक्षा में तुम्हें तलवार के साथ ही सोना पड़ेगा।

उदय सिंह: (रूखे स्वर में) तुम्हें तलवार से डर लगता है।

पन्ना: तलवार से डर! चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता है कुँवर! जैसे लता में फूल खिलते हैं, वैसे ही हमारे यहाँ वीरों के हाथों में तलवार खिलती है।

पन्ना धाय के चरित्र ने इतिहास के थपेड़ों को सहा है। उसे जीवन की अतल गहराइयों का बहुत ही सूक्ष्म एवं गहरा अनुभव है। राजपूताने की संपूर्ण गौरवगाथा को एकाँकीकार ने पन्ना धाय के माध्यम से व्यक्त करवाया है।

इसी प्रकार डॉ. रामकुमार वर्मा ने एक अन्य पात्र सोना के माध्यम से वातावरण एवं कथोपकथन के अनुसार अनेक सारगर्भित संवाद व्यक्त करवाए हैं। निश्चित रूप से एकाँकीकार का यही आशय है कि उस समय का समाज राज्य तंत्र की स्थिति-परिस्थिति को भली-भाँति जानता और समझता था। सोना द्वारा प्रमुख सारगर्भित संवाद विस्तृत व्याख्या योग्य हैं:-

- मैं ही क्या सारे नगर निवासी यह त्यौहार मना रहे हैं। नहीं मना रही हो तो तुम! धाय माँ तुम! पहाड़ बनने से क्या होगा? राजमहल पर बोझ बन कर रह जाओगी, बोझ! और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ पत्थर भी अपने सिर धारण करेंगे, आनंद और मंगल तुम्हारे किनारे होंगे, जीवन का प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी जो उठने में गीत गाएँगी, गिरने में नाच उठेंगी।
- धाय माँ! पागल कौन नहीं? महाराणा विक्रमादित्य अपने सात हजार पहलवानों के साथ पागल हैं। मल्ल क्रीड़ा ही तो उनका पागलपन है। महाराज बनवीर महाराणा विक्रमादित्य की आत्मीयता से पागल हैं। सारा नगर आज त्यौहार में पागल है। तुम कुँवर उदय सिंह के स्नेह में पागल हो, और मैं। (हँसकर) मेरी कुछ न पूँछो धाय माँ, मैं तो इन सबके पागलपन में पागल हूँ।
- धाय माँ! पागलपन कहीं कम होता है। पहाड़ बनकर कभी छोटे हुए हैं? नदियाँ आगे बढ़कर कभी लौटी हैं। फूल खिलने के बाद कभी कली बने हैं? सब आगे बढ़ते हैं। नहीं बढ़ती तो सिर्फ़ तुम। सदा एक सी।
- भाग्य! भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ। नूपुर मेरे पैरों में पड़े हैं तो इनका भी भाग्य है। जब मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं तो वह भी इनका भाग्य है।
- मेरे आगमन की सूचना देते हैं तो वह भी इनका भाग्य है। और जब मेरे पैर रुक जाते हैं तो ये मौन हो जाते हैं, वह भी इनका भाग्य है। भाग्य तो सबके होता है धाय माँ।

सोना और पन्ना धाय के चरित्र में कर्त्तव्य-बोध का अंतर है। पन्ना धाय के चरित्र ने इतिहास के थपेड़ों को सहा है। उसे जीवन की

पन्ना धाय का त्याग एवं बलिदान

अतल गहराइयों का बहुत ही सूक्ष्म एवं गहरा अनुभव है। राजपूताने की संपूर्ण गौरवगाथा को एकाँकीकार ने पन्ना धाय के माध्यम से व्यक्त करवाया है। इस प्रसंग में निम्नलिखित संवाद ऐतिहासिक विरासत हैं;

- आँधी में आग की लपटें तेज होती हैं सोना! तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ा गिरोगी। तुम्हारे सारे नूपुर बिखर जाएँगे। न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे गीत की इन लहरों को निगल जाएगा। चित्तौड़ रास-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।
- यहाँ का त्यौहार आत्म-बलिदान है। यहाँ का गीत मातृभूमि की वेदना का गीत है।

पन्ना धाय द्वारा कितना ऐतिहासिक निर्णय लिया जाता है। इस निर्णय की अर्थ परिधि असीमित है। यदि इसे भारतीय इतिहास के पन्नों का 'स्वर्णिम लेख' कहा जाए तो भी इस निर्णय का परिमापन नहीं किया जा सकता। इस संदर्भ में पन्ना धाय के ये संवाद दृष्टव्य हैं;

- सुला दूँगी। उसी को! उसी को सुला दूँगी जो मेरी आँखों का तारा है....चंदन....चंदन को सुला दूँगी। सामली! (सिसकियाँ) चंदन को सुला दूँगी। उस नन्हें से लाल को हत्यारे की तलवार के नीचे रख दूँगी।
- भवानी। तुमने मेरे हृदय को कैसा कर दिया। मुझे बल दो कि अपने राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। अपने लाल को दे सकूँ। यह राजपूतनी का व्रत है। यही राजपूतनी की मर्यादा है। यही राजपूतनी का धर्म है। मेरा हृदय वज्र का बना दो। माता के हृदय के स्थान पर पत्थर रख दो, जिससे ममता का स्रोत बंद हो जाए।

'दीपदान' एकाँकी का सारा कथानक एक ही स्थान पर (कुँवर उदय सिंह के कक्ष में) एक ही संध्या में समाप्त हो जाता है। लेकिन इस एक ही स्थान पर ऐसी सटीक संवाद योजना का वातावरण है, जो भारतीय नारी के उदात्त चरित्र को अभिव्यक्त करता है। एक धाय को अपने जीवन में कर्त्तव्य निर्वहन प्राणों से भी प्यारा है;

- ऐसे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान है। नमक से रक्त महान है, रक्त से नमक नहीं।

पन्ना धाय तो साक्षात् त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति है। उसके अंतस्तल का अंतर्द्वंद्व माँ की ममता और धाय के कर्त्तव्य पालन के मध्य बड़ी पवित्र करुणा के साथ उभरा है।

उपर्युक्त संवादों के आधार पर निश्चित रूप से कथावस्तु अत्यंत सुगठित है। जिज्ञासा, कौतूहल, अंतर्द्वंद्व और आकर्षण से पूर्ण कथानक कार्य की चरम सीमा तक तीव्रगति से पहुँचता है। पन्ना और कुँवर उदय सिंह के वार्तालाप का सुंदर समायोजन है।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस एकाँकी के माध्यम से रेखाँकित करने का प्रयास किया है कि पन्ना धाय अपने पुत्र प्रेम से अधिक महत्त्व देशप्रेम और कर्त्तव्य पालन को देती है। प्रत्येक चरित्र तत्कालीन राजपूताना समाज का जीता जागता उदाहरण है। बनवीर क्रूर, स्वार्थी और राजलिप्सा में डूबा हुआ प्राणी है। एकाँकीकार ने कीरत बारी के माध्यम से यह चित्रित करने का प्रयास किया है कि देशभक्ति के लिए उच्च पद या प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं होती। एक साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपनी सच्ची कर्त्तव्यनिष्ठा और देश-प्रेम की भावना के माध्यम से इतिहास में अपने लिए स्थान बना सकता है। पन्ना धाय तो साक्षात् त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति है। उसके अंतस्तल का अंतर्द्वंद्व माँ की ममता और धाय के कर्त्तव्य पालन के मध्य बड़ी पवित्र करुणा के साथ उभरा है। पन्ना का हृदय कमल सा कोमल और वज्र सा कठोर है। वह राज्य की रक्षा के लिए अपनी आँखों के सम्मुख अपने पुत्र की क्रूर हत्या से भी विचलित नहीं होती है। वह चतुर और दूरदर्शी होने के साथ-साथ निर्भीक भी है। एकाँकीकार डॉ. रामकुमार वर्मा का यही आशय है कि राष्ट्रीय हित में राजपूताना की वीराँगनाओं ने पारिवारिक हितों का भी बलिदान किया है। अस्तु! भारतीय साहित्य जगत् में एकाँकी नाटक विधा के धरातल पर 'दीपदान' एकाँकी सदैव 'मील का पत्थर' रहेगी। ◆

आशा की डोर

*इन्द्रजीत सिंह **

पंजाब में हमारे गाँव में अजीत सिंह नाम का एक किसान रहता था। लगभग 16 वर्ष पूर्व उनकी शादी हुई थी। लेकिन अभी उनके कोई सन्तान नहीं थी। बड़ी मान्य-मान्यताओं के बाद इतने वर्षों बाद उनके घर में किलकारियाँ गूँजी। अजीत सिंह बहुत अधिक खुश था। उन्होंने सारे गाँव में मिठाई बाँटी। गाँव वालों से यह कहते नहीं थकता था कि मेरे बुढ़ापे का सहारा आ गया। अब मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं है। अजीत सिंह ने अपने बच्चे का लालन-पालन बड़े ही प्यार और दुलार से किया तथा उसका नाम रखा 'गुरुविन्दर'। धीरे-धीरे समय बीतता गया। अजीत सिंह यही सोचता था कि उसके जीवन की सारी आशाएँ, सारे अरमान 'गुरुविन्दर' ही है। गुरुविन्दर आज 20 साल का हो गया था। उसने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की और उसके बाद अपने पिता के साथ खेती में हाथ बँटाने लगा। लेकिन उसका मन खेती में नहीं लगता था। उसका अधिकाँश समय दोस्तों के साथ ही व्यतीत होता था। उसका एक दोस्त मनप्रीत काफी पैसे वाले घर से था। वह किसी एजेन्ट के माध्यम से सऊदी अरब जा रहा था। उसने गुरुविन्दर से कहा कि तू भी मेरे साथ चल। उसने मनप्रीत से पूँछा कि विदेश जाने के लिए क्या करना पड़ता है? मनप्रीत ने कहा कि कुछ नहीं, बस पासपोर्ट और वीजा बनवाना पड़ता है। गुरुविन्दर ने कहा कि वे तो मेरे पास नहीं हैं। मनप्रीत ने कहा कि वे सब बन जाएँगे। मैंने एक एजेन्ट को बस सात लाख रुपये दिए और उसने बनवाकर सब कुछ दे दिया। अब तो गुरुविन्दर को रात-दिन एक ही बात मन में रहती थी कि सऊदी अरब कैसे जाऊँ। उसका मन उखड़ा-उखड़ा रहने लगा।

एक दिन अजीत सिंह ने अपनी पत्नी से कहा कि गुरुविन्दर आजकल उदास-उदास सा रहता है। वह मुझे नहीं बताएगा, ज़रा तू अपने बेटे से पूँछ कि आखिर बात क्या है? एक दिन गुरुविन्दर की माँ ने उसे खाना खिलाते समय पूछा कि बेटा बात क्या है? बोल! आखिर मेरे लिए तेरे सिवाए कौन है। तू मेरी आँखों का तारा है। मैं और तेरे बापू दोनों मिलकर तेरे जीवन की हर एक इच्छा को पूरा करेंगे। उसी समय अजीत सिंह आ गए। वह हँसकर बोले, हाँ भाई! माँ-बेटे में क्या बातचीत हो रही है? माँ वात्सल्य से भाव विभोर होकर बोली कि माँ हूँ गुरुविन्दर की! मेरे और बेटे के बीच की बात है। अजीत सिंह बोले कि वाहे गुरु! मेरे बेटे को सलामत रखे लेकिन मैं भी तो जानूँ कि आखिर बात क्या है? अब तक गुरुविन्दर चुप था। माँ ने फिर पूछा? बोल बेटे बोल। क्या बात है? गुरुविन्दर बोला, माँ मैं सऊदी अरब जाना चाहता हूँ और वहाँ जाकर काम करूँगा। इसके लिए केवल सात लाख रुपयों की आवश्यकता पड़ेगी। यह बात सुनकर माँ-बाप के जैसे होश ही उड़ गए। माँ-बाप दोनों की आँखों में आँसू आ गए। अजीत सिंह ने गुरुविन्दर की माँ को ढाँढस बँधाया। लेकिन माँ तो माँ होती है! वह गुरुविन्दर को पकड़कर रोने लगी। माँ ने कहा, बेटा मेरे पास 9-10 एकड़ जमीन है। उसमें काम करके हम लोग आराम से अपना जीवन गुजार लेंगे। अब मैं और तेरे बापू भी बूढ़े होते जा रहे हैं। बेटा अब तू ही मेरे बुढ़ापे की लकड़ी है। हम दोनों तेरे बिना एक दिन भी नहीं जी पाएँगे।

माँ ने कहा, बेटा मेरे पास 9-10 एकड़ जमीन है। उसमें काम करके हम लोग आराम से अपना जीवन गुजार लेंगे। अब मैं और तेरे बापू भी बूढ़े होते जा रहे हैं। बेटा अब तू ही मेरे बुढ़ापे की लकड़ी है। हम दोनों तेरे बिना एक दिन भी नहीं जी पाएँगे।

अजीत सिंह नि:शब्द खड़े थे। गुरुविन्दर बिना पूरा खाना खाए वहाँ से चला गया। रात में भी गाँव घूमकर काफी देर से लौटा। उसकी माँ ने समझा था कि थोड़ी देर में गुरुविन्दर मान जाएगा। मैं उसको समझा-बुझाकर मना लूँगी, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा था। उसने यहाँ तक कह दिया कि जब तक उसे सात लाख रुपये का प्रबंध नहीं होगा, वह खाना भी नहीं खाएगा। एक दिन हो गया, दो

* **श्री इन्द्रजीत सिंह**, ईसीआईएल में मास्टर तकनीशियन हैं। पंजाबी लोक संस्कृति रंगमंच के ये ख्यातिप्राप्त निर्देशक हैं। देश के अनेक मंचों पर इन्होंने पंजाबी लोक-कला के कार्यक्रमों का निर्देशन किया है। मानवीय संबंधों की अतल गहराइयों को समझने एवं रचनाओं के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में इनकी विशेष रुचि है।

दिन हो गए। अंत में माँ-बाप दोनों गुरुविन्दर के आगे झुक गए। अजीत सिंह के पास कुल 9 एकड़ से थोड़ी अधिक खेती थी। यदि सात लाख रुपयों का प्रबंध करना है तो उसने सोचा कि 7 एकड़ खेती बेचनी पड़ेगी। फिर उसके पास बचेगा ही क्या! लेकिन गुरुविन्दर की इच्छा के आगे वह कुछ नहीं कर सका। उसने आस-पड़ोस के लोगों से इसके बारे में बात की तो लोगों ने भी उसकी मजबूरी का फायदा उठाया। वे तो इस मजबूरी का लाभ उठाने के लिए तैयार ही बैठे थे। बोले आजकल खेती सस्ती हो गई है। सात लाख रुपयों में 8 एकड़ खेती देनी होगी। अजीत सिंह ने सबसे वास्तविकता को बताया लेकिन कोई भी सुनने को तैयार नहीं था। आखिर में वह इस बात को भी मान गया। सच है! मनुष्य हारता है तो अपनी औलाद से ही हारता है। दस-पन्द्रह दिन में सात लाख रुपयों का प्रबंध हो गया। गुरुविन्दर ने अपना पासपोर्ट, वीजा आदि सब बनवा लिया। अगले सप्ताह ही वह सऊदी अरब चला गया।

लेकिन गुरुविन्दर की माँ को कानों-कान इस बात का पता चल गया था कि उसके पति को अब कोई उधार नहीं देता है। वह एक धर्मपरायण महिला थी। अपने पति की भावनाओं का बहुत सम्मान करती थी।

सऊदी में गुरुविन्दर के दोस्त के पास काम की मंजूरी थी। लेकिन इसके पास ऐसा कुछ भी नहीं था। कुछ दिन तो वह अपने घर से ले गए पैसों से खाता-पीता रहा। बाद में उसने अपने दोस्तों से उधार लेना चालू कर दिया। गुरुविन्दर की हालत दिन-प्रति-दिन खराब होती जा रही थी। वह वापस घर भी नहीं आ सकता था। उसके पास वापस आने तक के किराए के पैसे नहीं बचे थे। धीरे-धीरे उसने एक गाड़ी-मेकैनिक के पास काम करना शुरू कर दिया। इधर गाँव में गुरुविन्दर के माता-पिता दोनों का स्वास्थ्य खराब रहने लगा। खेती भी लगभग 2 एकड़ ही बची थी। उसमें दोनों लोगों का खाना-पीना और रोज दवाओं का प्रबंध नहीं हो पाता था। गुरुविन्दर के पिता अजीत सिंह रोज अपनी पत्नी से यही कहते थे भागमान! चिन्ता न कर। एक बार अपना पुत्तर वापस आ जाएगा तो हम दोनों फिर से चंगे हो जाएँगे। गुरुविन्दर की माँ बोली, आप चिन्ता न करें जी। मैंने तो अपने गुरुविन्दर के लिए एक सुंदर सी कुड़ी देख रखी है। एक बार बहू के हाथ का चावल-राजमा खाया तो फिर पक्के चंगे हो जाएँगे। वह बोलती रही, अजीत सिंह सुनते रहे। माँ-बाप की ममता ही ऐसी होती है कि अपने बच्चों के भविष्य को बनाने-सँवारने में कब उम्र की ढलान पर आ जाते हैं, पता ही नहीं चल पाता। बात करते-करते काफी रात हो गई थी। अजीत सिंह गहरी नींद में सो गए थे। फिर भी गुरुविन्दर की माँ बोले जा रही थी। उसने अजीत सिंह को जगाकर कहा कि मुझे मना मत करना। गुरुविन्दर के आने पर पूरे गाँव में मोतीचूर के लड्डू बाँटूँगी। खुशी मन से वह भी सो गई।

लेकिन समय अपना इतिहास और भूगोल स्वयं लिखता है। अजीत सिंह का स्वास्थ्य दिनों दिन और बिगड़ने लगा। इधर उनका भी गाँव

हरा-भरा स्वर्णिम पंजाब

के किराने और दवाइयों की दुकान में उधार बढ़ने लगा। दुकानदारों ने अजीत सिंह को उधार देना बन्द कर दिया। ताने मारने लगे कि चार महीने से सुनते-सुनते तंग आ गए हैं कि ''मेरा पुत्तर जब आएगा, पूरा उधार चुकता कर देगा।'' अजीत सिंह को भी बार-बार उधार माँगने से शर्म आने लगी थी। लेकिन अपने मन के दुख को किससे सुनाता। किसी प्रकार वह काम चला लेता था। अपनी पत्नी से भी इस बात की कभी चर्चा नहीं करता था। लेकिन गुरुविन्दर की माँ को कानों-कान इस बात का पता चल गया था कि उसके पति को अब कोई उधार नहीं देता है। वह एक धर्मपरायण महिला थी। अपने पति की भावनाओं का बहुत सम्मान करती थी। अजीत सिंह का आत्मविश्वास सदैव बढ़ाती रहती थी। जब भी गाँव में कहीं 'गुरूग्रंथ साहिब' का 'अखंड पाठ' सुनती तो यही कहती कि जब मेरा गुरुविन्दर आएगा, मैं भी 'अखंड पाठ' करवाऊँगी, गाँव की कुड़ियों को खीर-पूड़ी से खुश करूँगी। अजीत सिंह भी अपनी पत्नी का सम्मान कम नहीं करते थे। बोले, कर लेना! कर लेना! कभी तेरा हाथ पकड़ा है! गुरुविन्दर तेरा बेटा, तू उसकी माँ! भाई मैं कौन होता हूँ, बीच में पड़ने वाला। इतना सुनकर गुरुविन्दर की माँ की आँखों में वात्सल्य के आँसू आ गए। यह बोलकर कि वाहे गुरू! एक बार मेरे गुरुविन्दर को वापस ले आएँ, बस उसका ब्याह रचा दूँ, पोते-पोतियों का मुँह देख लूँ। हम दोनों का क्या! उन्ही की ठंडी छाँव में कहीं, और कैसे भी गुजर-बसर कर लूँगी।

गुरुविन्दर की माँ अपने आँचल से अजीत सिंह के माथे का पसीना पोछ रही थी। बलकार ने वहीं से गुरुविन्दर को फोन किया लेकिन उसने जो सोचा था, वही उसने किया।

इधर सऊदी में गुरुविन्दर अपने माँ-बाप को लगभग भूल सा गया था। वहाँ आस-पास पंजाब के काफी लड़के काम करते थे। पास के ही गाँव का एक लड़का बलकार सिंह कभी-कभी गुरुविन्दर से मिलने आया करता था। उससे काफी दोस्ती हो गई थी। परदेश में अपनी जुबान के लोगों से आत्मीयता होने में देर नहीं लगती। एक दिन वह गुरुविन्दर के पास आया और बोला, मेरे बापू की तबीयत खराब है, मैं अपने घर जा रहा हूँ। समय निकालकर तेरे अम्मा-बापू से भी मिल आऊँगा। कुछ देना हो तो दे दे। मैं उनको दे दूँगा। वे खुश हो जाएँगे। लेकिन गुरुविन्दर बेरोजगारी से इतना टूट चुका था कि न उसके पास पैसे थे, और न संवेदना। वह स्वभाव से भी रूखा हो गया था। वह बोला मेरे पास कुछ नहीं है। और तू मेरे गाँव जाकर क्या करेगा? मैं सब देख लूँगा। बलकार समझ गया। एक सप्ताह बाद वह सऊदी से अपने गाँव आ गया। अपने बापू की सेवा में लग गया। दो दिन बाद वह बापू के लिए दवाइयाँ लेने जा रहा था, सोचा रास्ते से हटकर थोड़ी ही दूर में तो गुरुविन्दर का गाँव है। चलें जाकर उसके अम्मा-बापू से मिल लें। बलकार दवाइयाँ लेने के लिए तैयार हो रहा था। तभी उसे याद आया कि गुरुविन्दर ने कुछ दिया तो है नहीं। खाली हाथ उसके अम्मा-बापू का मत्था कैसे टेकूँगा। फिर उसने सोचा कोई नहीं! अपने पास से दस डॉलर दे दूँगा कि गुरुविन्दर ने भेजा है। उसने शहर जाकर उसे अपने बापू के लिए दवाइयाँ ली। वापसी में गुरुविन्दर के गाँव गया। वह उसका घर जानता था। उसके गाँव में उसकी रिश्ते की बुआ रहती थीं।

गुरुविन्दर के घर पहुँचकर उसने देखा कि उसके पिता अजीत सिंह चुपचाप बैठे थे। उसने अपना मत्था टेका, बोला जी 'मैं' गुरुविन्दर का दोस्त बलकार हूँ। अजीत सिंह ने तुरंत कहा कि गुरुविन्दर कहाँ है? जरूर यहीं कहीं छुपा होगा! अपने बचपन में भी वह छुप जाया करता था। अजीत सिंह इधर-उधर देख रहे थे। बलकार किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा चुपचाप खड़ा था। इतने में गुरुविन्दर की माँ भी बाहर आ गई। बलकार ने अजीत सिंह से कहा कि गुरुविन्दर नहीं आया, उसने ये दस डॉलर भेजे हैं! अजीत सिंह जीवन में पहली बार जोर से बोले होंगे। बोले ''साडा गुरुविन्दर कित्थे है? मैंनूँ ई डॉलर नूँ की करणा?'' इतना बोलकर वे अचेत हो गए। डॉलर भी हवा में उड़ गया। गुरुविन्दर की माँ अपने आँचल से अजीत सिंह के माथे का पसीना पोछ रही थी। बलकार ने वहीं से गुरुविन्दर को फोन किया लेकिन उसने जो सोचा था, वही उसने किया। दो-चार बार हैलो! हैलो! बोलकर मोबाइल 'स्विच ऑफ' कर दिया। घर के पास ही गुरुद्वारा था। गुरुद्वारे में शबद-कीर्तन हो रहे थे। आवाज सुनाई दे रही थी - *''सतनाम वाहे गुरू .....''*

◆

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस- 2015

निगमीय अनुसंधान एवं विकास द्वारा 11 मई, 2015 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2014-15 की अवधि में ईसीआईएल द्वारा विकसित किए गए नए उत्पादों एवं विभिन्न अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को प्रदर्शित किया गया। समारोह में डॉ. एम. लक्ष्मीनारायण, वैज्ञानिक 'एच' (नि.), रक्षा इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान प्रयोगशाला तथा उपाध्यक्ष, आईईईई, हैदराबाद को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था।

श्री एम.आर.के. नायुडु, प्रमुख, निगमीय अनुसंधान एवं विकास ने अपने स्वागत भाषण में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रतिवर्ष 11 मई को

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस-2015 के अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; संबोधित करते हुए

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन देश में विभिन्न प्रौद्योगिकी उपलब्धियों को जानने के लिए किया जाता है। श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने कहा कि अनेक सामरिक क्षेत्रों में भारत ने सीमित संसाधन होने पर भी चुनौतियों का सामना किया है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि 'भारतीय बौद्धिक संपदा' की अवधारणा पर 'इन हाउस' उत्पादन में 'आत्म-निर्भरता' का सिद्धाँत सदैव मार्गदर्शक है। श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) ने भारत के महान वैज्ञानिकों का स्मरण करते हुए कहा कि जिन वैज्ञानिकों एवं अभियंताओं ने प्रौद्योगिकी के प्रमुख क्षेत्रों में आत्म-निर्भरता दिलाई है, हमें उन पर गर्व है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने 'सामरिक इलेक्ट्रानिकी हेतु स्वदेशीकरण एवं प्रौद्योगिकी' विषय पर सारगर्भित प्रस्तुति दी। उन्होंने 'रेडार प्रणाली', 'नेविगेशन उपस्कर', 'अंडरवाटर एवं सोनार

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर अनुसंधान एवं विकास रिपोर्ट- 2015 का विमोचन करते हुए। (दाएँ से) श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (का.); श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; डॉ. एम. लक्ष्मीनारायण, वैज्ञानिक 'एच' (नि.), डीएलआरएल; रियर एडमिरल एस. महापात्रा (नि.), वरिष्ठ तकनीकी विशेषज्ञ एवं श्री एम.आर.के. नायुडु, प्रमुख: निगमीय अनुसंधान एवं विकास

प्रणाली', 'वायु यातायात नियंत्रण प्रणाली', 'मिसाइल सीकर्स' एवं 'रक्षा संचार उपकरण' जैसे विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला। रियर एडमिरल एस. महापात्रा (नि.), वरिष्ठ तकनीकी विशेषज्ञ ने भी आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुसंधान एवं विकास के महत्त्व को रेखाँकित किया। समारोह में मुख्य अतिथि द्वारा अनुसंधान एवं विकास रिपोर्ट 2014-15 का विमोचन किया गया। इस रिपोर्ट को द्विभाषी (हिन्दी एवं अंग्रेजी) में प्रकाशित किया गया। रिपोर्ट में 2014-15 की अवधि में नाभिकीय, रक्षा, वाँतरिक्ष, सुरक्षा तथा सूचना प्रौद्योगिकी एवं दूरसंचार तथा ई-अभिशासन के नए उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों से परिचित कराया गया है। कार्यक्रम में श्री बी. अशोककुमार, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक, सामरिक इलेक्ट्रानिकी प्रभाग ने गण्यमान्यों को मंच पर आमंत्रित किया तथा श्री एम. बद्रीनारायण, प्रमुख: सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएँ प्रभाग ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रस्तुतिः निगमीय अनुसंधान एवं विकास

महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम
झलकियाँ

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; ईसीआईएल स्थापना दिवस के अवसर पर डॉ. ए.एस. राव की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; ईसीआईएल स्टाफ एवं वर्कर्स यूनियन की बैठक में संबोधित करते हुए

डॉ. एम.वाई.एस. प्रसाद, निदेशक, शार; पीएलसी एवं स्कैडा प्रणाली को प्रस्थानित करते हुए

भारतीय नाभिकीय सोसाइटी (आईएनएस), हैदराबाद की वर्तमान एवं निवर्तमान कार्यकारणी

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि एवं श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) 'तेलंगाना हरिता हारम' के संदर्भ में वृक्षारोपण करते हुए

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि एवं वरिष्ठ अधिकारीगण हिन्दी पत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' अंक-4 का विमोचन करते हुए

राग न होने से आवागमन नहीं होता ---- गौतम बुद्ध

महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम
झलकियाँ

नाईस दिवस के अवसर (दाएँ से दूसरे) श्री पी. सुधाकर, अप्रनि तथा (मध्य में) डॉ. जी. सतीश रेड्डी, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार एवं निदेशक, आरसीआई

कार्मिक लोक शिकायतें, कानून एवं न्याय विभाग से संबंधित संसदीय स्थाई समिति के समक्ष ईसीआईएल का शीर्ष प्रबंधन

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; श्री एन. श्यामसुंदर, प्रमुखः सीएडी को 'सर्वोत्तम हाउसकीपिंग' पुरस्कार प्रदान करते हुए

सामाजिक विकास हेतु जनजागरूकता कार्यक्रम में श्री पी. सुधाकर, अप्रनि एवं पऊवि से संबंधित वरिष्ठ अधिकारीगण

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; सामाजिक विकास हेतु जनजागरूकता कार्यक्रम में संबोधित करते हुए

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; एनपीआर के पास 'शस्त्रधारणी भवन' में वृक्षारोपण करते हुए

जीवन में बुद्धि का नहीं, लक्ष्मी का साम्राज्य है --- सिसरो

महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम

निगमीय सामाजिक दायित्व: झलकियाँ

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; श्री एन.वी.एस.एस. प्रभाकर, विधायक, उप्पल (बाएँ से दूसरे) की उपस्थिति में जिला परिषद हाईस्कूल, कापरा, हैदराबाद के छात्रों को स्कूल बैग देते हुए

निगमीय सामाजिक दायित्व कार्यक्रम, तिरुपति में श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; स्कूल बैग वितरित करते हुए, साथ में (सबसे बाएँ) श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक)

निगमीय सामाजिक दायित्व कार्यक्रम, तिरुपति में श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; से छात्रा स्कूल बैग प्राप्त करती हुई

निगमीय सामाजिक दायित्व कार्यक्रम, तिरुपति में श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; संबोधित करते हुए

यूनिट कार्यालय, तिरुपति में निगमीय सामाजिक दायित्व कार्यक्रम के समापन समारोह के अवसर पर राष्ट्रगान

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; मंडल परिषद अपर प्राथमिक विद्यालय, कमला नगर, हैदराबाद के छात्रों को चिकित्सा किट देते हुए

स्वास्थ्य-सौन्दर्य

मानव जीवन में शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक सौन्दर्य का विशेष महत्त्व है। आज के व्यस्त जीवन में व्यावसायिक प्रगति अत्यंत आवश्यक है। इस प्रगति के लिए हमें स्वयं को स्वस्थ रखना चाहिए। प्रकृति ने हमको प्राकृतिक फलों एवं वनस्पतियों की अपार संपदा दी है। अच्छे स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य के लिए हमें प्राकृतिक वनस्पतियों एवं फलों का अपने जीवन में पर्याप्त मात्रा में उपयोग करना चाहिए।

प्रकृति ने हमें कुछ ऐसे फल दिए हैं जो बहु-आयामी हैं। शारीरिक ऊर्जा, दंत सुरक्षा तथा नेत्र सुरक्षा एवं शारीरिक त्वचा को सुकोमल बनाए रखने के लिए इनका समान रूप से उपयोग किया जाता है। ऐसे फलों में 'संतरा' का नाम सर्वप्रथम आता है। हमारे देश में नागपुर का संतरा विश्व-विख्यात है। यह अत्यंत स्वास्थ्यवर्धक फल है। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन 'सी' होती है। लौह तत्त्व (आयरन) और पोटेशियम भी काफी मात्रा में होता है। संतरा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विद्यमान 'फ्रुक्टोज', 'डेक्स्ट्रोज', 'खनिज' व 'विटामिन' शरीर में पहुँचते ही ऊर्जा देना प्रारंभ कर देते हैं। इसके प्रयोग से शरीर स्वस्थ रहता है, शरीर में गतिमयता आती है, त्वचा में सौन्दर्य आता है तथा सौन्दर्य में वृद्धि होती है। यह सर्व गुणकारी फल है।

दैनिक दिनचर्या में इसका प्रयोग बहुत लाभप्रद है

- संतरा का रस तन-मन को शीतलता प्रदान करता है
- तेज बुखार में संतरा के रस का सेवन करने से शरीर का तापमान कम हो जाता है
- हृदय रोगी को संतरा का रस एवं शहद दोनों मिलाकर देने से आशातीत लाभ मिलता है
- संतरा के प्रयोग से दाँतों एवं मसूड़ों के रोग दूर होते हैं
- छोटे बच्चों के लिए संतरा का रस अमृत तुल्य है। बच्चों को हृष्ट-पुष्ट बनाने हेतु दूध में चौथाई भाग मीठे संतरा का रस मिलाकर पिलाना बहुत हितकारी है
- पेट में गैस, अपच, जोड़ों का दर्द, उच्च रक्तचाप, गठिया तथा 'बेरी-बेरी' रोग में भी संतरा का प्रयोग लाभकारी होता है
- गर्भवती तथा यकृत रोग से ग्रसित महिलाओं के लिए संतरा का रस बहुत लाभकारी होता है। इसके प्रयोग से जहाँ प्रसव के समय होने वाली परेशानियों से मुक्ति मिलती है, वहीं प्रसव पीड़ा भी कम होती है

- संतरा का प्रयोग जुकाम में बहुत लाभप्रद है। सूखी खाँसी में भी लाभकारी है
- संतरा के सूखे छिलकों का चूर्ण गुलाब जल या कच्चे दूध में मिलाकर पीसकर आधे घंटे तक लेप लगाने से कुछ ही दिनों में चेहरा साफ, सुंदर और काँतिमय हो जाता है
- संतरा के ताजे फूल को पीसकर उसका रस सिर पर लगाने से बालों की चमक बढ़ती है
- संतरा के छिलकों से तेल निकाला जाता है। शरीर पर इसका तेल लगाने से मच्छर नहीं काटते
- संतरा के ताजे छिलकों को हाथ से दबाने पर निकलने वाला रस नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है

संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा उनमें सबसे बढ़कर है --- सूर्यकाँत त्रिपाठी 'निराला'

आजाद पंक्षी हूँ आज मैं

आजाद पंक्षी हूँ आज मैं, नादान पंक्षी हूँ आज मैं।

न किसी की फिकर है
न किसी की परवाह है
न कोई मेरा अपना है
न कोई पराया है ।

आजाद पंक्षी हूँ आज मैं, नादान पंक्षी हूँ आज मैं।

खुले आसमान में उड़ने की इच्छा है
पहली बारिश में भीगने की चाहत है
न अब किसी का इंतज़ार है
न देना अब कोई जवाब है।

आजाद पंक्षी हूँ आज मैं, नादान पंक्षी हूँ आज मैं।

मेरी मुस्कराहट मेरे लिए है
मेरे ग़म अब सिर्फ़ मेरे हैं
न किसी के प्यार की डोर है
न किसी के नफ़रत की चोट है।

आजाद पंक्षी हूँ आज मैं, नादान पंक्षी हूँ आज मैं।
आजाद पंक्षी हूँ आज मैं, नादान पंक्षी हूँ आज मैं।।

सिद्धार्थ कुमार
अभियंता, आरआईडी

स्वच्छ भारत अभियान

सरकार ने शुरू किया अब,
भारत में स्वच्छता का अभियान ।
पवित्र संकल्प और शुद्ध विचार से,
मिलेगी भारत को नई पहचान ।।

अब गाँव-गाँव, शहर-शहर में,
इस अभियान को आगे बढ़ाना है ।
हर एक घर और गली को,
हमको सुन्दर, स्वच्छ बनाना है ।।

अपने आस-पास की स्वयं,
सफाई करके मार्गदर्शक बन जाएँ ।
सभी लोगों को इससे जोड़कर,
अभियान को ऊँचाई तक पहुँचाएँ ।।

गंगा के हर तट और घाट को,
हम सब मिलकर साफ करेंगे ।
गंदगी फैलाने वालों सावधान,
तुम्हें हम न माफ करेंगे ।।

सभी रोगों का मूल गंदगी है,
अब सबको यह समझाना है ।
आस पड़ोस को स्वच्छ करके,
मिलकर स्वास्थ्य लाभ उठाना है ।।

खूब स्वच्छ वातावरण करो,
यह संदेश जन-जन तक पहुँचाएँ ।
भारत को पुन: सुंदर बनाकर,
विश्व में भारत का गौरव बढ़ाएँ ।।

राजेशकुमार शर्मा
उप महाप्रबंधक, सीएनएसजी

संदेशा आया है

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित पत्र दिनांक 13-06-2015 के साथ 'ईसीआईएल गौरव' हिन्दी गृहपत्रिका वर्ष-4, अंक-4 प्राप्त हुई। बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रो. मोहनलाल छीपा, कुलपति
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रिय श्री नागेश्वर राव जी एवं डॉ. अवस्थी,

'ईसीआईएल गौरव', अंक-4 भेजने के लिए धन्यवाद। मुझे यह लिखते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आपने पत्रिका का स्तर ऊँचा बनाए रखा है। वस्तुत:, पत्रिका में आपके नए प्रयासों से मैं अत्यंत प्रभावित हूँ। अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को सरल हिन्दी में प्रकाशित करना, नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रति ईसीआईएल के सम्मान का द्योतक है। ईसीआईएल के कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों का रचनात्मक सहयोग पत्रिका की गरिमा बढ़ा रहा है। पत्रिका की पठनीयता उत्कृष्ट है। आप दोनों तथा आपकी टीम द्वारा किया गया प्रयास प्रशंसनीय है। ईसीआईएल के गौरव को इसी प्रकार बढ़ाते रहें। इसी शुभकामना के साथ,

कमोडोर एल.एम. खन्ना, वीएसएम (नि.)
कार्यपालक निदेशक (नि.), ईसीआईएल, हैदराबाद

प्रिय डॉ. राजनारायण अवस्थी जी,

'ईसीआईएल गौरव' पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका में सटीक हिन्दी शब्दों के प्रयोग के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। माँ जननी भारती से कामना है कि इस भाषा के विकास के लिए आपको आशीर्वाद दें।

डॉ. ए.के. पुरोहित, न्यूरोसर्जन
निज़ाम इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस (निम्स), हैदराबाद

संपादक महोदय,

'ईसीआईएल गौरव', अंक-4 की प्राप्ति हुई। पत्रिका भेजने के लिए सादर धन्यवाद। 'ईसीआईएल गौरव' अत्यंत उत्कृष्ट स्तर की पत्रिका है। पत्रिका के सफल संपादन में आपका परिश्रम स्पष्टत: परिलक्षित है। ईसीआईएल की नवोन्मेषी परियोजनाओं को वैज्ञानिक लेखन के माध्यम से प्रस्तुत करना एक उल्लेखनीय प्रयास है।

डॉ. सुनेत्रा शोलापुरकर
राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, मैसूर

प्रिय डॉ. राजनारायण अवस्थी जी,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी गृहपत्रिका वर्ष-4, अंक-4 प्राप्त हुआ। बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी पत्रिका उत्कृष्ट स्तर की है। सारगर्भित वैज्ञानिक आलेख, रचनाएँ ज्ञान से भरपूर एवं प्रेरणादायक हैं। पत्रिका में संस्थान के बढ़ते कदम एवं अनेक उपलब्धियों को सुन्दर तरीके से दर्शाया गया है। प्रस्तुतीकरण उत्कृष्ट है। सभी आलेख एवं रचनाएँ हिन्दी राजभाषा के बढ़ते आयाम को दर्शाते हैं। आपको उच्च कोटि के संपादकीकरण के लिए हार्दिक बधाई। मैं कामना करता हूँ कि आपकी पत्रिका की उत्कृष्टता सदैव बनी रहे। धन्यवाद एवं शुभकामनाओं सहित,

डॉ. पी.के. जैन, वैज्ञानिक 'एफ'
एआरसीआई, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
भारत सरकार, हैदराबाद

महोदय,

'ईसीआईएल गौरव', अंक-4 की प्राप्ति हुई, बहुत-बहुत धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित की गई सभी रचनाएँ श्रेष्ठ एवं महत्त्वपूर्ण हैं। श्री सीएच.वी.आर.एस. गोपालाकृष्णा का लेख '21 मीटर मेस (एमएसीई) दूरदर्शक' एवं सुश्री पी.वी. शुभलक्ष्मी का लेख 'कैन्सर हॉस्पिटल सूचना प्रबंधन प्रणाली (चिम्स)' को पढ़कर बहुत ज्ञानवर्धक जानकारी मिली। श्रीमती चन्दा शर्मा का लेख 'भारतीय साहित्य एवं भक्ति परंपरा' तथा कु. मोनिशा यादव द्वारा लिखी गई पंक्ति 'पेन्सिल का आत्मबोध' रोचक एवं पठनीय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका एक निर्देशिका के रूप में उभरकर आई है। पत्रिका के सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं।

रवि कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा)
मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय, हैदराबाद

सारे पुण्यों और सद्गुणों का मूल सत्य है --- वाल्मीकि

मान्य महोदय,

'ईसीआईएल गौरव', अंक-4 हमें प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक काफी आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के विभिन्न विषयों पर आधारित आलेख अत्यंत रोचक हैं। पत्रिका के आलेखों में तकनीकी, स्वास्थ्य, संस्कृति एवं साहित्य का अद्भुत संगम कराया गया है। तकनीकी आलेख विशेषकर '21 मीटर मेस दूरदर्शक' व 'सुरक्षित नेटवर्क अभिगम प्रणाली' अत्यंत ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ इस बात का भी प्रतीक है कि हिन्दी में तकनीकी आलेख सूचनापरक एवं प्रभावी हो सकते हैं। यह काफी सुंदर प्रयास है, कृपया इसे भविष्य में भी जारी रखें। प्रत्येक पृष्ठ के नीचे प्रकाशित महानुभावों के वक्तव्य पत्रिका की सुंदरता में चार-चाँद लगा रहे हैं। संगठन के विभिन्न कार्यक्रमों से संबंधित छायाचित्र काफी आकर्षक हैं। हम पत्रिका की व्यापक सफलता की कामना करते हैं।

सुरेंद्र कुमार जीवातोडे
नोडल अधिकारी (राजभाषा) व सहायक महाप्रबंधक
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, हैदराबाद

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिन्दी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। आशा करते हैं कि आप भविष्य में भी इसी प्रकार संपर्क बनाए रखेंगे तथा संस्थान की राजभाषा विषयक जानकारी देते रहेंगे।

चि.वें. सुब्बाराव, हिन्दी अधिकारी
राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव', अंक-4 प्राप्त हुआ। पत्रिका की रचनाएँ विविधतापूर्ण, बहुत ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका को समग्र रूप से पढ़ने से ज्ञात होता है कि संपादक मंडल ने इसे तैयार करने में परिश्रम किया है तथा उनकी मेहनत रंग लाई है। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। कामना करता हूँ कि राजभाषा का यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

श्याम सुंदर कथूरिया
उप निदेशक (राजभाषा)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली

महोदय,

'ईसीआईएल गौरव' हिन्दी गृह-पत्रिका वर्ष-4, अंक-4 (अक्टूबर, 2014-मार्च, 2015) प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में विज्ञान, साहित्य, स्वास्थ्य आदि सभी विषयों को समेटने का प्रयास किया गया है जो कि सराहनीय है। विज्ञान के चरम से लेकर प्रसन्नचित्त करने वाला साहित्य इसमें संजोया गया है। वर्तमान में विकराल रूप धारण करने वाले रोग कैन्सर हेतु भी ईसीआईएल अपनी सेवाएँ दे रहा है तथा कैन्सर से लड़ने हेतु 'कैन्सर हॉस्पिटल सूचना प्रबंधन प्रणाली (चिम्स)' डॉक्टरों तथा रोगियों के लिए अत्यधिक उपयोगी है। अत: पत्रिका संग्रहणीय है और इसके संपादन से जुड़े लोग साधुवाद के पात्र हैं।

डॉ. महेश कुमार, तकनीकी अधिकारी (हिन्दी)
भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित ईसीआईएल की गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' अंक-4 की प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है। 'ईसीआईएल गौरव', अंक-4 पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, विचार, कविता एवं अन्य सामग्री बहुत ही रोचक एवं सराहनीय हैं एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यह हम सबके लिए बहुत ही प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक होगी। 'ईसीआईएल गौरव' के संपादक मंडल एवं ईसीआईएल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हडको की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

उत्तम कुमार दास, हिन्दी नोडल अधिकारी
हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद

प्रिय महोदय,

'ईसीआईएल गौरव' का चौथा अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका में जहाँ एक ओर राजभाषा संबंधी गतिविधियों की सूचना अन्य कार्यालयों को प्रेरणा प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर तकनीकी स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित वैज्ञानिक लेख सहज ही संग्रहणीय बन पड़े हैं। पत्रिका का कलेवर अत्यंत आकर्षक है। तकनीकी विषयों पर हिन्दी में जिस सुगमता के साथ विषय-वस्तु प्रस्तुत की गई है, उसके लिए पत्रिका से जुड़े सभी कर्मियों को कोटिश: बधाई।

रूद्र नाथ मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
एनएमडीसी लिमिटेड, हैदराबाद

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव', वर्ष-4, अंक-4 प्राप्त हुई। पत्रिका में जो तकनीकी लेख प्रकाशित हुए हैं उन्हें पढ़कर 'दूरदर्शक नियंत्रण इकाई' तथा 'परमाणु स्पेक्ट्रमिकी' के बारे में आधारभूत जानकारी मिली। 'एक शब्द: विभिन्न शब्द भेद' राजभाषा कार्यान्वयन में बहुत ही सार्थक होंगे। 'ईसीआईएल गौरव' के प्रकाशन के लिए संपादन समिति, ईसीआईएल के सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

रामध्वनि शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'डी'
स्थाई सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद

महोदय,

उपर्युक्त विषय पर आपकी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' का अंक-4 हमें साभार प्राप्त हुआ। पत्रिका की अंतर्वस्तुओं में 'ईसीआईएल के बढ़ते कदम', 'तकनीकी स्तंभ', 'राजभाषा स्तंभ' आदि विषयों पर व्यापक प्रस्तुतीकरण आदि ज्ञानवर्धक, जानकारीपरक, पठनीय एवं रुचिकर लगे। खासकर 'विश्व हिन्दी दिवस' पर आयोजित 'कवि सम्मेलन' पत्रिका की रौनक बढ़ा रहा है और वास्तव में प्रेरणात्मक एवं सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र उन्नत हैं। हम यही कामना करते हैं कि 'ईसीआईएल गौरव' पत्रिका ऐसी ही बुलन्दियों को चूमे। सादर धन्यवाद,

सुरेन्द्र सिंह राजपूत
उप महाप्रबंधक (भंडार) एवं समन्वयक, राभाकास
इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड, मणवालकुरिच्चि

आदरणीय महोदय,

आपकी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' का अंक-4 प्राप्त हुआ। पत्रिका की सामग्री बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से तकनीकी लेख हिन्दी में लिखने वाले अधिकारी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका का प्रत्येक स्तम्भ सारगर्भित और रोचक है। पत्रिका भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रियंका सिंह, सहायक राजभाषा अधिकारी
पॉवरग्रिड कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय
शिलांग (मेघालय)

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई गृहपत्रिका हमारे कार्यालय भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद को प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुन्दर एवं आकर्षक है। इस अंक में उत्तम लेखों का संकलन है। लेखों की शृंखला में श्री गोपालाकृष्णा जी द्वारा 'मेजर अटमास्फेरिक चेरेन्कोव प्रयोग' की जानकारी प्राप्त हुई जो दुर्लभ है, साथ ही श्री के.वी. सुरेश द्वारा लिखा गया लेख 'एसएनएएस (सुरक्षित नेटवर्क अभिगम प्रणाली)' अत्यंत उपयोगी है। डॉ. एस. सुरेश बाबु एवं सुश्री पी.वी. शुभलक्ष्मी द्वारा लिखा गया लेख दुर्लभ लेखों में से है। इस पत्रिका की बड़ी विशेषता साहित्य एवं विज्ञान का सामंजस्य है। चंदा शर्मा का लेख 'भारतीय साहित्य एवं भक्ति परंपरा' तथा काव्याँजलि में संकलित 'रिश्ते', 'हिन्दी मेरी पहचान है' और 'पुकार' कविताएँ भावपूर्ण हैं। पत्रिका के आगामी अंक के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

रोशन आरा बेगम, प्रबंधक (हिन्दी)
भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

प्रतिक्रियाएँ भेजने के लिए *'ईसीआईएल गौरव संपादन समिति'* आपके प्रति सादर आभार व्यक्त करती है

श्री शशाँक शर्मा सुपुत्र श्री राजेशकुमार शर्मा, उप महाप्रबंधक, संचार प्रणाली वर्ग
का शोधपत्र "Text Normalition of Code Mix and Sentiment Analysis"
आईसीएसीसीआई (International Conference on Advances in Computing Communications and Intormatics), 2015 के लिए चुना गया है।
यह शोधपत्र आईईईई एक्सप्लोर में प्रकाशित होगा।
संप्रति, श्री शशाँक शर्मा आईआईआईटी, भुवनेश्वर में कंप्यूटर साइंस विषय पर एम.टेक. कर रहे हैं।

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से
श्री शशाँक शर्मा के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ

संकल्पना

''सामरिक इलेक्ट्रानिकी में देश को आत्म-निर्भरता प्राप्त करने हेतु योगदान देना''

संकल्प

''परमाणु ऊर्जा, रक्षा, वाँतरिक्ष, नागर विमानन, सुरक्षा तथा सामरिक, आर्थिक और सामाजिक महत्त्व के अन्य क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए विशेष रूप से सामरिक इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में राष्ट्र को उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी प्रदाता के रूप में अपनी स्थिति को सशक्त करना''

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि, ईसीआईएल; ब्रह्मोस उद्योग मीट में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ

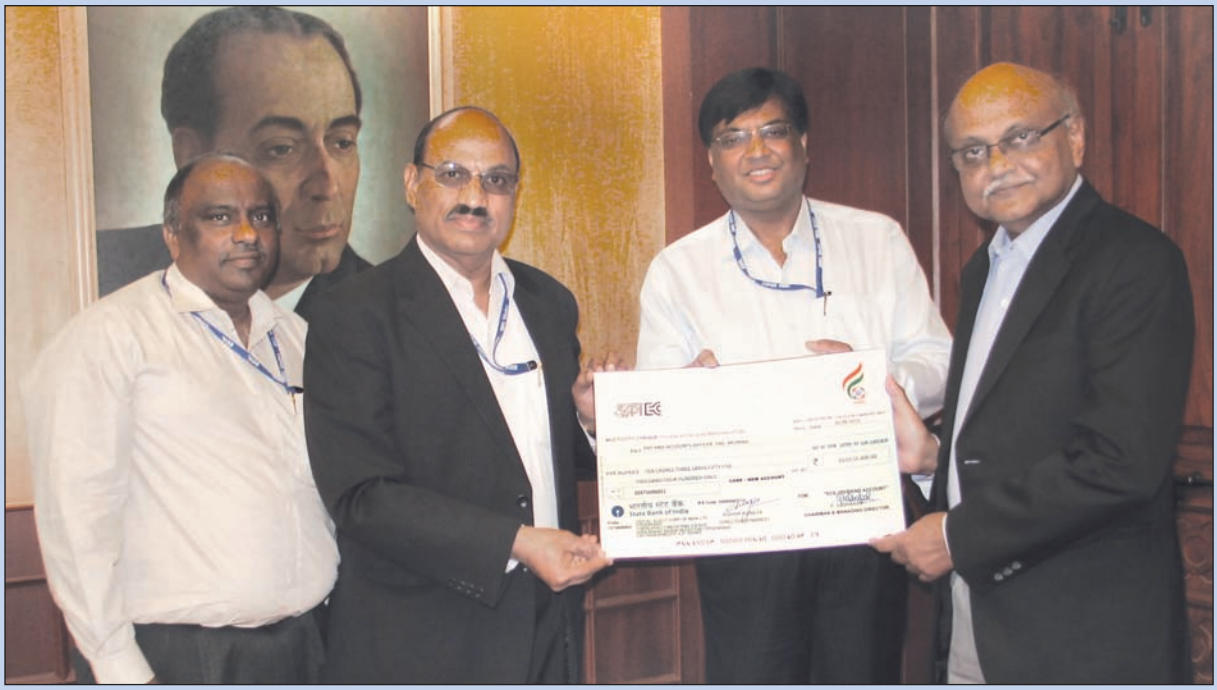

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि (बाएँ से दूसरे); डॉ. आर.के. सिन्हा, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग को वर्ष 2014-15 के लिए 10.04 करोड़ रुपये का लाभाँश चेक देते हुए। साथ में (बाएँ से तीसरे) श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) तथा (सबसे बाएँ) श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक)

स्लाइडिंग गेट

रोड ब्लॉकर

ईसीआईएल की सामरिक इलेक्ट्रानिकी उत्पाद-विविधा

विस्फोट संसूचक

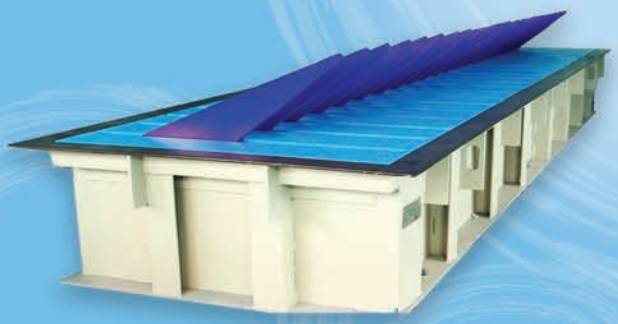

टायर किल्लर

सुवाह्य एक्स-रे बैगेज निरीक्षण प्रणाली

इकाEC

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड

भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम

ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062

वेबः www.ecil.co.in